कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

● भोपाल मंगलवार 07 से 13 जुलाई 2026 ● वर्ष-27 ● अंक-07 ● पृष्ठ-20 ● मूल्य-20 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

खरीफ विशेषांक 2026

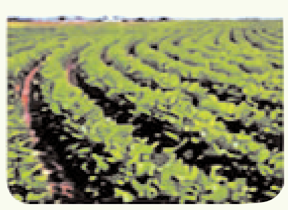

अंदर के पृष्ठों में...

- न्यूट्रिशन का सिक्सर लगाइए 5
- बीजोपचार के लिये सीड ट्रीटिंग ड्रम 7
- सोयाबीन का उत्पादन कैसे बढ़ाएं? 8
- श्री विधि अपनाएं 9
- बरसात में खेत का सही प्रबंधन 10
- लाभदायक अरहर की खेती 11
- संतुलित उर्वरक प्रबन्धन 13
- लघु धान्य फसलों की उन्नत खेती 17
- स्वराज की PRO-TEK ट्रेक्नोलॉजी 21

NEW HOLLAND
HARVESTAR TC5.30
HARVESTING KA SUPERSTAR
खरीफ सीजन के लिए बुकिंग प्रारंभ
ASLI HERO KI ASLI TAAQAT
AIR CONDITIONED WORLD CLASS CABIN
All-Weather, Dust-Protected Cabin for Enhanced Operator Comfort and Higher Productivity
अधिक जानकारी के लिए कॉल करें.... Mob. 919522333347

Also Available on: Flipkart amazon.in

इंस्टेंट डिस्काउंट ₹10 000* तक

HDFC BANK | SBI card | pine labs

TOLL FREE NO. 1800 266 0018

अधिकृत डीलर: भोपाल: वरेण्यम हीरो (प्रभात पेट्रोल पंप, रायसेन रोड 9289922466, जे.के. रोड 8959905381), साँई हीरो (डी.आई.जी. बंगला, बैरसिया रोड) 9289922685, यूनाइटेड हीरो (कोहेफिज़ा) 9289923150, इंदौर: सुखमणी हीरो (अन्नपूर्णा रोड) 9289922719, सी.एन. हीरो (एयरपोर्ट रोड) 9289923061, सेठी ऑटोमोबाइल्स (भतरकुआं) 9289923211, रुक्मणी ऑटोमोटिव (एलआईजी स्क्वायर के पास) 8871444414, मेहता ऑटोमोबाइल्स (देवास नाका) 9821741577, ग्वालियर: अनुष्का हीरो (सिटी सेन्टर 9289922371, मुरार 4099920, कम्पू 4072000), तरुण अंगद हीरो (फूलबाग 9289922403, लश्कर चिनाज 2430534), जबलपुर: दुआ हीरो (राइट सिविल लाइन्स) 9289922350, सुदर्शन हीरो (नेपियर टाउन 9289922353, मदन महल 9111100352, दमोह नाका 9111100344), उज्जैन: क्षिप्रा हीरो (फ्रीगंज, देवास रोड) 9289922354, लोहिया हीरो (चिमनगंज मंडी के सामने) 9289922718, बैतूल: खण्डेलवाल हीरो 9289922624, सीहोर: मंत्री हीरो (कन्हैयालाल मंत्री पेट्रोल पंप, इंदौर नाका) 9622267567, ब्यावरा: आनंद हीरो 9289922871, गुना: गगन हीरो 9289922368, अशोक नगर: आरव हीरो 9621743269, होशंगाबाद: पुण्यशिला हीरो 9289922360, हरदा: राहुल हीरो 9289922491, विदिशा: पाल हीरो 9289922379, दमोह: इण्डिया ऑटो हीरो 9289922573, सागर: सेन्ट्रल हीरो (भगवानगंज, मकरोनिया) 9289922376, टीकमगढ़: आनंद हीरो 9289923112, छतरपुर: आनंद हीरो (झांसी रोड 9289922374, पन्ना रोड 7389238472), बड़वानी: शर्मा हीरो 9289922742, बुरहानपुर: श्रीजी हीरो 9289922372, देवास: खुराना हीरो (ए.बी. रोड 9289922488, गंगानगर 9993690392), धार: साक्षी हीरो 9289922018, हाट पिपलिया: श्रीराम हीरो 9289922164, झाबुआ: नाकोड़ा हीरो 9289922679, कुक्षी: अन्नपूर्णा हीरो 9289922749, खण्डवा: व्यवहार हीरो 9289923018, खरगोन: निमाड़ हीरो 9289922378, महू: लक्ष हीरो 9289923176, पीथमपुर: रघुवंशी हीरो 9289923047, सनावद: राजेश हीरो 9289922774, बालाघाट: जायसवाल हीरो 9289922572, छिन्दवाड़ा: सत्कार हीरो 9289922805, मण्डला: शुभम हीरो 9289922600, नरसिंहपुर: रचना हीरो 9289922377, रीवा: वदिका हीरो (टी.पी. नगर 9752263333, इलाहाबाद रोड 9171705391), सतना: स्टार हीरो 9289922356, वदिका हीरो 9289922108, शहडोल: विभोर हीरो 9289923109, गुप्ता हीरो 9289922370, कटनी: हर्ष हीरो 9289923168, मैहर: कुन्दन हीरो 9289922743, बजरंग मोटर्स 7354558000, सीधी: राजेन्द्र मोटर्स 9289923113, सिवनी: सुदर्शन हीरो 9821745435, चौरई: श्रीजी ऑटोमोबाईल्स, 9821743342, भिण्ड: शिवम हीरो 9289922787, दतिया: शिव हीरो 9289923172, मुरैना: गगन हीरो 9289922678, श्योपुर: आशीष हीरो 9289922832, शिवपुरी: रघुवंशी हीरो 9289922571, बड़नगर: स्वास्तिक हीरो 9289922773, शाजापुर: बाबा हीरो 9289922833, रतलाम: एक्सीलेन्ट हीरो (महू रोड 9289922375, सैलाना रोड 07412-409800) नीमच: उत्तम हीरो 9289922387, मन्दसौर: रामदर्शन हीरो 9289922389, जावरा: रिलायबल हीरो 9289923045.

रायपुर: छत्तीसगढ़ हीरो 9289922351, आदर्श हीरो 9289922864, राजधानी हीरो 9289922414, राजनांदगांव: जय हीरो 9289922357, धमतरी: सत्योम हीरो 9289922525, कांकेर: राहुल हीरो 9289922634, महासमुंद: चन्द्रा हीरो 9289922623, बलोदाबाजार: अग्रवाल हीरो 9289922959, आरंग: श्री राम हीरो 9289922968, बेमेतरा: श्री साईं हीरो 9289922835, कवर्धा: सरस्वती हीरो 9289922958, जगदलपुर: विजयपाल हीरो 9289923064, दंतेवाड़ा: जय विनायक हीरो 9289922950, दल्लीराजहरा: लक्ष्मी हीरो 9289922803, भाटापारा: कुशाल हीरो 9289923052, भिलाई: इंडियन हीरो 9289922356, चौहान मोटर्स 9289923017, दुर्ग: उत्साह हीरो 9289923114, उत्साह हीरो 7000695300, बिलासपुर: रात्या हीरो 9289922464, गोलछा हीरो 9289922708, अंबिकापुर: आनंद हीरो 9289922358, सरगुजा हीरो 9289923110, कोरबा: शांति हीरो 9289922813, छत्तीसगढ़ हीरो 9289923057, रायगढ़: गोयल हीरो 9289922373, आदित्य हीरो 9289923031, जांजगीर: आनंद हीरो 9289922772, बैकुंठपुर: आर.के. हीरो 9289922912, जशपुर: आकाश हीरो 9289922909.

जुलाई में सामान्य से कम बारिश का अनुमान

जून महीने में सामान्य से 40 प्रतिशत कम बारिश

नई दिल्ली। देश में जुलाई के दौरान सामान्य से कम बारिश होने की संभावना है। इस दौरान दीर्घावधि औसत (एलपीए) के 94 प्रतिशत से कम पानी बरसने का अनुमान है। मौसम विभाग ने अपने मासिक बुलेटिन में यह जानकारी दी।

दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के जून से सितंबर के चार महीनों के सीजन के दौरान 1971-2020 के आंकड़ों के आधार पर 280.4 मिमी एलपीए के साथ सबसे अधिक वर्षा जुलाई में ही होती है। इससे पहले जून में भी बहुत कम बारिश दर्ज की गई है। मॉनसून के पहले महीने में केवल 99.5 मिमी वर्षा हुई, जो सामान्य से लगभग 40 प्रतिशत कम है और यह 1901 में रिकॉर्ड शुरू होने के बाद से छठा सबसे शुष्क जून माह में पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में 197.5 मिमी वर्षा हुई, जो 1901 के बाद इस महीने के लिए सबसे कम है, जबकि मध्य भारत ने 84.4 मिमी पानी बरसा और यहां किया गया। अपने रिकॉर्ड में सातवां सबसे शुष्क जून दर्ज किया गया।

मौसम विभाग के अनुसार जुलाई के दौरान देश के अधिकांश हिस्सों में सामान्य से कम बारिश हो सकती है। हालांकि उत्तर-पश्चिम और पूर्वोत्तर, मध्य-पूर्व और पूर्वी प्रायद्वीपीय क्षेत्र के कुछ हिस्सों में सामान्य से अधिक वर्षा होने की संभावना है। कम वर्षा का असर सीधे तौर पर धान, दलहन और तिलहन जैसी वर्षा-आधारित फसलों की बोआई पर पड़ेगा। मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने कहा कि दक्षिण-पश्चिम मॉनसून, जो मध्य और उत्तर-पश्चिम भारत के कुछ हिस्सों में अपने निर्धारित समय से लगभग 10 दिन पीछे चल रहा है। मॉनसून 4 जून को केरल में सामान्य आगमन की तारीख से तीन दिन बाद आया था।

महापात्र ने यह भी कहा कि बंगाल की खाड़ी पर एक निम्न दबाव का क्षेत्र बन रहा है, जिससे जुलाई के पहले सप्ताह में देश के कई हिस्सों, विशेष रूप से मध्य और प्रायद्वीपीय भारत में बिजली गिरने और गरज के साथ भारी बारिश होने की संभावना है।

महापात्र ने कहा, निम्न दबाव गतिविधि के कारण जुलाई के पहले सात दिनों तक अच्छी वर्षा होने की संभावना है और यह दस दिन तक भी बढ़ सकती है। पर्याप्त मात्रा में वर्षा धान जैसी फसलों के लिए फायदेमंद रहेगी। महीने का पहला भाग फसलों के लिए मददगार होगा, लेकिन दूसरे हिस्से में सामान्य से कम बारिश के कारण चुनौती का सामना करना पड़ सकता है।

अल नीनो की स्थिति, निम्न दबाव प्रणाली की कम संख्या जैसे कारकों के कारण जून में कम पानी बरसा है। महापात्र का कहना है कि अल नीनो की गतिविधि अगले साल के वसंत तक जारी रहने की संभावना है और समय के साथ और तेज होगी।

अधिकांश मॉडल कह रहे हैं कि अल नीनो के नकारात्मक प्रभाव को मॉनसून सीजन की दूसरी छमाही में एक सकारात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव से कम किया जा सकता है, लेकिन इस बारे में अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगा कि यह कितना प्रभावी साबित होगा। महापात्र ने कहा कि सामान्य से कम वर्षा कुछ क्षेत्रों में जल संकट का कारण बन सकती है, इसलिए किसानों को जल संरक्षण उपाय अपनाने चाहिए और कम पानी की आवश्यकता वाली फसलें उगाने पर अधिक ध्यान देना होगा। मौसम विभाग ने जुलाई के दौरान देश के अधिकांश हिस्सों में तापमान सामान्य से ऊपर रहने का पूर्वानुमान लगाया है।

किसानों के लिए जल्द आएगा मिट्टी की सेहत बताने वाला मोबाइल ऐप

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि सरकार जल्द ही किसानों के लिए एक मोबाइल ऐप लाएगी जिससे उन्हें मिट्टी की सेहत का पता लगाने में मदद मिलेगी। साथ ही उन्होंने खादों के संतुलित और समझदारी भरे इस्तेमाल पर जोर दिया। उन्होंने रासायनिक खादों पर निर्भरता को प्राकृतिक रूप से कम करने के लिए जैविक खेती के तरीकों को अपनाने की भी वकालत की। हरियाणा के रेवाड़ी जिले के बावल में खेत बचाओ अभियान के समापन समारोह में लोगों को संबोधित करते हुए श्री चौहान ने रासायनिक खादों के अंधाधुंध इस्तेमाल पर चिंता जताई। एक महीने तक चलने वाला खेत बचाओ अभियान 1 जून को मध्य प्रदेश के रायसेन जिले से शुरू किया गया था।

श्री चौहान ने कहा कि जल्द ही किसान अपने मोबाइल फोन पर एक ऐप डाउनलोड कर सकेंगे। उन्होंने कहा आप अपने खेत में खड़े होंगे और आपका मोबाइल आपको बताएगा कि आपकी मिट्टी में कौन से पोषक तत्व हैं और कितना उर्वरक डालना चाहिए। हम इस पर भी काम कर रहे हैं ताकि आपको कोई परेशानी न हो। उन्होंने किसानों से उर्वरकों का अंधाधुंध इस्तेमाल बंद करने का आग्रह किया, क्योंकि यूरिया और डीएपी के ज्यादा इस्तेमाल से मिट्टी धीरे-धीरे खराब हो रही है। उन्होंने किसानों से प्राकृतिक खेती आजमाने को भी कहा। अगर सही तरीके से प्राकृतिक खेती की जाए, तो पैदावार कम नहीं होती।

श्री चौहान ने कहा कि देश का अनाज भंडार भरा हुआ है। चावल के उत्पादन में भारत दुनिया में पहले नंबर पर आ गया है। हमने चीन को पीछे छोड़ दिया है। इस कृषि क्रांति में हरियाणा के किसानों ने बहुत अहम भूमिका निभाई है। इस मौके पर हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी भी मौजूद थे।

183 लाख हेक्टेयर में खरीफ फसलों की बुवाई

धान, तिलहन और कपास का रकबा घटा

नई दिल्ली। देश में खरीफ सीजन 2026 की बुवाई पिछले वर्ष की तुलना में धीमी गति से आगे बढ़ रही है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के अनुसार देश में कुल 182.72 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में खरीफ फसलों की बुवाई हुई है, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि तक 236.46 लाख हेक्टेयर में बुवाई हो चुकी थी। इस बार 53.74 लाख हेक्टेयर कम क्षेत्र में बुवाई दर्ज की गई है।

मंत्रालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार धान, दलहन, मोटे अनाज, तिलहन और कपास जैसी प्रमुख खरीफ फसलों के रकबे में पिछले साल की तुलना में कमी देखने को मिली है। हालांकि गन्ना और जूट एवं मेस्ता की खेती में मामूली बढ़ोतरी दर्ज की गई है। देश में धान की बुवाई 25.75 लाख हेक्टेयर में हुई है, जबकि पिछले वर्ष इसी समय तक यह आंकड़ा 34.41 लाख हेक्टेयर था। धान के रकबे में 8.65 लाख हेक्टेयर की कमी दर्ज की गई है। दलहनों का कुल रकबा 14.92 लाख हेक्टेयर रहा, जो पिछले वर्ष के 21.46 लाख हेक्टेयर से 6.53 लाख हेक्टेयर कम है। सबसे अधिक गिरावट अरहर की बुवाई में दर्ज की गई, जिसका क्षेत्र 8.45 लाख हेक्टेयर से घटकर 3.56 लाख हेक्टेयर रह गया। उड़द और मूंग की बुवाई में भी कमी दर्ज की गई।

श्री अन्न (मोटे अनाज) का कुल रकबा 31.84 लाख हेक्टेयर रहा, जबकि पिछले वर्ष यह 36.07 लाख हेक्टेयर था। मक्का, बाजरा और रागी की बुवाई में कमी दर्ज की गई, जबकि ज्वार की खेती में 0.68 लाख हेक्टेयर की बढ़ोतरी हुई। तिलहन फसलों का रकबा 16.99 लाख हेक्टेयर रहा, जो पिछले वर्ष के 36.41 लाख हेक्टेयर की तुलना में

19.42 लाख हेक्टेयर कम है। सबसे ज्यादा गिरावट सोयाबीन की बुवाई में दर्ज की गई, जहां रकबा 19.97 लाख हेक्टेयर से घटकर 6.92 लाख हेक्टेयर रह गया। वहीं मूंगफली की खेती भी 6.42 लाख हेक्टेयर कम हुई। हालांकि सूरजमुखी और अरंडी के क्षेत्र में हल्की बढ़ोतरी दर्ज की गई। कपास का रकबा 29.66 लाख हेक्टेयर रहा, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 45.36 लाख हेक्टेयर में बुवाई हुई थी। यानी कपास के क्षेत्र में 15.70 लाख हेक्टेयर की कमी आई है। गन्ने की खेती 57.31 लाख हेक्टेयर में हुई है, जो पिछले वर्ष के 56.64 लाख हेक्टेयर से 0.67 लाख हेक्टेयर अधिक है। वहीं जूट एवं मेस्ता का रकबा भी 6.13 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 6.25 लाख हेक्टेयर हो गया।

विशेषज्ञों का मानना है कि खरीफ बुवाई का अंतिम स्वरूप आने वाले हफ्तों में मानसून की प्रगति पर निर्भर करेगा। यदि जुलाई के दौरान देशभर में सामान्य और अच्छी बारिश होती है तो बुवाई का रकबा तेजी से बढ़ सकता है और वर्तमान कमी काफी हद तक पूरी हो सकती है। वहीं बारिश में देरी या असमान वितरण रहने पर खरीफ उत्पादन पर असर पड़ने की आशंका बनी रहेगी।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 20/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

न्यूट्रिशन का सिक्सर लगाइए-धान की भरपूर पैदावार पाइए

श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय
सीनियर जीएम एवं हेड एग्रोनामिस्ट
आर एम पी सी एल, इंदौर (म.प्र.)

धान की भरपूर पैदावार का नया मंत्र!

महावीरा जिरोंन पावर प्लस - न्यूट्रिशन का सिक्सर!

धान की फसल से अधिकतम उत्पादन लेने के लिये उन्नत कृषि कार्यमाला निम्नलिखित है। किसान भाई धान की भरपूर पैदावार का नया मंत्र अपनाकर धान की फसल से सर्वाधिक उत्पादन ले सकते हैं।

धान की फसल में क्यों जरूरी है 'न्यूट्रिशन का सिक्सर'?

फास्फोरस	16%	मजबूत एवं गहरी जड़ें विकसित करता है। पौधों की प्रारंभिक बढ़वार को तेज करता है। अधिक कल्ले बनने में सहायता करता है।
जिंक	0.5%	जिंक की कमी से होने वाले लक्षणों से बचाव। हरी-भरी एवं स्वस्थ फसल। बेहतर प्रकाश संश्लेषण और पौधों की वृद्धि।
मैग्नीशियम	0.5%	क्लोरोफिल निर्माण में महत्वपूर्ण। पत्तियों को गहरा हरा बनाए। ऊर्जा निर्माण एवं भोजन बनाने की क्षमता बढ़ाए।
बोरॉन	0.2%	पुष्प एवं दानों के बेहतर विकास में सहायक। दानों की गुणवत्ता एवं भराव बढ़ाए। पोषक तत्वों के बेहतर परिवहन में मदद करे।
कैल्शियम	19%	मजबूत तना एवं स्वस्थ जड़ें। पौधों की कोशिकाओं को मजबूती प्रदान करे। तनाव सहन करने की क्षमता बढ़ाए।
सल्फर	11%	प्रोटीन निर्माण में महत्वपूर्ण। नाइट्रोजन के बेहतर उपयोग में सहायक। फसल की गुणवत्ता एवं उत्पादन बढ़ाए।

महावीरा जिरोंन पावर प्लस के प्रमुख लाभ

- धान की बुवाई अथवा रोपाई के समय करें प्रयोग।
- महावीरा जिरोन पावर प्लस तीन बैग एवं 26 किग्रा पोटाश प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- एक ही खाद में 6 आवश्यक पोषक तत्वों की उपलब्धता।
- धान मेंअधिक कल्ले एवं समान वृद्धि।
- जिंक एवं सल्फर की कमी को प्रभावी रूप से पूरा करे।
- बेहतर दाना भराव एवं उच्च गुणवत्ता का उत्पादन।
- चमकदार एवं खुशबूयुक्त धान पैदा करने में सक्षम।
- 25 से 30 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन पाएं।

महावीरा जिरोंन पावर प्लस - न्यूट्रिशन का सिक्सर!
धान की शानदार बढ़वार और बेहतर उत्पादन का भरोसेमंद साथी

अधिक जानकारी के लिये कंपनी के कस्टमर केयर नंबर +918956926412 पर भी संपर्क किया जा सकता है।

साप्ताहिक सुविचार

जैसी करनी वैसा फल, आज नहीं तो निश्चत कल।
– पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

चुनौतीपूर्ण खरीफ फसल उत्पादन

इस साल के अनिश्चित मानसून को देखते हुये खरीफ फसलों का उत्पादन अत्यधिक चुनौतीपूर्ण दिख रहा है। मानसून के आगमन में 10 से 12 दिन की देरी से खरीफ का पूरा परिदृश्य बदल गया है। मौसम विभाग का सामान्य से कम बारिश का अनुमान एवं सुपर अल नीनो की स्थिति के कारण कृषि क्षेत्र चिंतित है। हालांकि सरकार की ओर से बार-बार यह कहा जा रहा है कि किसानों को चिंता करने की जरूरत नहीं है, सरकार स्थिति पर नजर रखे हुये है। सरकार के इस कोरे आशवासन से किसानों का पेट भरने वाला नहीं है। पहले भी इस तरह की परिस्थितियां निर्मित हुई हैं जिस पर सिवाय औपचारिकता के कुछ हासिल नहीं हुआ है।

कृषक दूत सम्पादकीय

60 प्रतिशत कृषि क्षेत्र वर्षा आश्रित है। सरकार बारिश कहां से लायेगी। बारिश की कमी से खरीफ की किसी भी फसल का उत्पादन नामुमकिन है। इसके साथ ही रबी फसलों का भविष्य भी अंधकारमय होगा।

इस साल की परिस्थितियां बिल्कुल विपरीत हैं। मानसून पूर्व की बारिश से खरीफ फसलों की तैयारी एवं बुवाई 50 प्रतिशत के लगभग पूरी हो जाती थी। इस साल प्रि-मानसून बारिश नहीं होने से खरीफ बुवाई बिल्कुल नहीं हो पायी है। प्रदेश में मुख्य रूप से सोयाबीन एवं धान 60 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र में लगायी जाती है। इस साल बारिश की कमी से दोनों फसलों की बुवाई जुलाई प्रथम सप्ताह से शुरू हुई है। मौसम विभाग के अनुसार जुलाई का दूसरा एवं तीसरा सप्ताह भी बारिश की कमी के साथ गुजरेगा। ऐसी स्थिति में खरीफ फसलों के ऊपर संकट के बादल यथावत मंडरा रहे हैं। वर्तमान में खेती की लागत इतनी अधिक बढ़ गई है कि किसान दोबारा बोनी करने की स्थिति में नहीं है। पहली बुवाई ही बड़ी मशक्कत के साथ हो पाती है। मौसम की परिस्थिति देखने के बाद ही बुवाई का फैसला करना चाहिये। ऐसे समय पर सरकार का यह दायित्व बनता है कि किसानों को मौसम भविष्यवाणी के आधार पर कृषि सलाह जारी करना चाहिये। जिन किसानों की पहली बुवाई खराब हुई है उसकी भरपाई की व्यवस्था भी होनी चाहिये। कम पानी वाली फसलों की उन्नत किस्मों के बीज की व्यवस्था एवं उनकी तकनीकी किसानों तक पहुंचाने की जरूरत है। सोयाबीन की बुवाई 10 जुलाई तक कृषि वैज्ञानिक करने की सलाह दे रहे हैं। जिन क्षेत्रों में भरपूर बारिश 10 जुलाई तक नहीं होती उन किसानों को वैकल्पिक फसलों की बुवाई पर ध्यान देने की आवश्यकता है। एक ही फसल के ऊपर निर्भरता उचित नहीं होगी। इस साल का खरीफ उत्पादन बेहद चुनौतीपूर्ण है। संयम, दृढ़िता एवं आत्मविश्वास के साथ इस संकट को भी आसानी से पार किया जा सकता है। खरीफ बिगड़ने पर किसानों का पूरा साल बिगड़ेगा इसलिये सुव्यवस्थित फैसले एवं तकनीकी सलाह से इस संकट से निजात पायी जा सकती है।

राष्ट्रीय वन महोत्सव (1 से 8 जुलाई)

जन-जन के जीवन से जुड़े हैं हमारे वन

• प्रो. (डॉ.) भागचन्द्र जैन
उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय कृषि पत्रकार संघ (नाज)
ऐ.एस/43.1 जैन मंदिर के पास लभाण्डी
पोस्ट-कृषक नगर रायपुर (छग)

वन-मन-धन, सबके ऊपर वन। जन-जन की आशा- हमारे वन। जन-जन का जीवन वन। वन से बादल, बादल से पानी, पानी से जीवन। वृक्षों की महत्ता सदियों से है। भविष्य पुराण, भर्तहरि ऋषि, संत तुलसीदास और महाकवि कालिदास सभी ने वृक्ष की गाथा का वर्णन किया है। महाभारत में वृक्षों की महिमा बखानी है। भगवान श्रीकृष्ण ने वृक्षों की गाथा गायी है।

हमारे जीवन का युगों-युगों से वनों से अटूट सम्बन्ध रहा है। भारतीय संस्कृति में वन गमन का एक आदर्श स्थान रहा है। महर्षि बाल्मीकि और भगवान श्री राम ने हमारे वनों की शोभा बढ़ायी है। भगवान बुद्ध को भी वृक्ष के नीये बोध हुआ था।

एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर कहा गया है। वृक्षों में पादप जीवन होता है। वृक्ष सदियों से पूज्यनीय है। विभिन्न प्रकार की औषधियां वृक्षों की देन है। वृक्षों से स्वादिष्ट, पौष्टिक फल हमें मिलते हैं। संत तुलसीदास ने फलदार वृक्षों की तुलना संतों से की है-

तुलसी संत सुअम्ब तरू, फूले फलहिं पर हेत।
इतते पे पाहन हनत, उतते वे फल देत।।

ऋषि-मुनियों ने वृक्षों की स्तुति देवी-देवताओं की तरह की है। पेड़-पौधों की रक्षा धार्मिक कार्य माना जाता है। ऋषि भतृहरि ने वृक्षों की कटाई के दुष्कर्म को नरक के समान बताया है-

वक्षांश्छत्तवा पशुन्हत्वा कृत्वा रूधिर कर्दम्।
यद्येव गम्यते स्वर्गो नरक केत गम्यते।।

भविष्य पुराण में कहा गया है कि जो बरगद, पीपल, नीम, इमली, बेल, आंवला तथा आम के वृक्ष लगाते हैं, वे कभी नरक नहीं जाते हैं। महाकवि कालिदास के आश्रम से जब शकुंतला ने विदाई ली थी, तब वे वृक्ष से लिपटकर रोयी थी। महाभारत में वृक्षों की संज्ञा धर्मपुत्रों से की गई है, वृक्ष लगाकर उनकी पुत्र की तरह रक्षा करनी चाहिये।

पावन वृक्ष और उनसे जुड़े देवता

वृक्ष	संबंधित देवता
बरगद	ब्रम्हा, विष्णु, महेश, हरि, कृष्ण, पंचानन, कुबेर, लक्ष्मी।
पीपल	विष्णु, बुद्ध, कृष्ण, ब्रम्हा, लक्ष्मी, सूर्य, दुर्गा, अप्सरा, गंधर्व।
तुलसी	कृष्ण, विष्णु, राम, नारायण, हरि, जगन्नाथ, वृंदावती, चांद, लक्ष्मी।
अशोक	बुद्ध, इन्द्र, विष्णु, गंधर्व, अप्सरा।
बेल	शिव, दुर्गा, लक्ष्मी, सूर्य।
आम	लक्ष्मी, गोवर्धन, बुद्ध, गंधर्व।
बांस	कृष्ण, पूर्वज पूजा, वंश वृद्धि।
नीम	शीतला, मनसा, वंश वृद्धि।
केला	लक्ष्मी, पूर्वज पूजा, वंश वृद्धि।
आंवला	लक्ष्मी, कार्तिकेय, विष्णु, गंधर्व।

स्त्रोतः कृषि व्यवस्था, जयपुर।

आज एक ओर औद्योगीकरण का प्रकाश तेजी से फैल रहा है, वहीं दूसरी ओर प्रदूषण से खतरा भी बढ़ता जा रहा है। इन परिस्थितियों के कारण राष्ट्रीय वन महोत्सव की भूमिका हर वर्ष बढ़ती जा रही है। सम्पूर्ण विश्व में प्रदूषण मुक्त वातावरण बनाने के लिये निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। वृक्ष पर्यावरण की रक्षा के सजग प्रहरी हैं। पर्यावरण की रक्षा के लिये वन ही एकमात्र उपयुक्त साधन सिद्ध हुये हैं।

वनों का क्षेत्रफल कम होते जा रहा है। विश्व की 11 प्रतिशत भूमि हमारे देश में है और संसार की 15 प्रतिशत से अधिक जनता हमारे देश में रहती है, परन्तु यह विसंगति है कि भारत में विश्व के वन भूभाग का केवल दो प्रतिशत हिस्सा स्थित है। यह चिंतनीय विषय है कि वन कम क्यों होते जा रहे हैं? वनों की रक्षा कैसे की जाये? आजादी के समय 1947 में हमारे देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 33 प्र्रतिशत क्षेत्र में वन क्षेत्र था, यह वन क्षेत्र आज लगभग 18 प्रतिशत रह गया है।

वन का क्षेत्रफल कम होने से पर्यावरण इतना प्रभावित हुआ है कि असामयिक और खण्ड वृष्टि होने लगी है। ऋतुओं ने अपने प्राकृतिक स्वभाव में परिवर्तन सा कर दिया है। वृक्षों से मिलने वाली ऑक्सीजन प्राण वायु होती है- यह प्राण वायु हमें दूषित वातावरण में आसानी से नहीं मिल पाती है। पर्यावरण में संतुलन बनाये रखने के लिये यह आवश्यक है कि वृक्षारोपण निरंतर किया जाये। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि जिस जगह वृक्ष अधिक होते हैं, वहां बादलों से पानी अपने आप बरस जाता है, पेड़ों की पत्तियों में ऐसा आकर्षण होता है कि पानी दूध की धार की तरह नीचे गिरने लगता है, जिस भूमि में वृक्ष नहीं होते हैं वह भूमि मरूभमि हो जाती है, क्योंकि पानी तो वहां बरसता नहीं। अगर वर्षा बंद करनी हो तो वृक्षों को काट दीजिये।

वृक्ष जीवन को प्राण वायु देते हैं। वृक्ष पर्यावरण की रक्षा करते हैं। जड़ी-बूटियां, तेल, गोंद, फल, राल देते हैं, इमारती और जलाऊ लकड़ी देते हैं। कृषि के लिये जो अनुपयुक्त भूमि है- उसे वृक्ष नया जीवन देकर कृषि योग्य बनाते हैं। वृक्ष प्राकृतिक छटा बिखेरते हैं और पशु-पक्षियों को बसेरा देते हैं। वृक्ष जनता को रोजगार देते हैं और आर्थिक आमदनी भी देते हैं।

हमारे देश में वन का कुल क्षेत्रफल 6.3 लाख वर्ग किलोमीटर है, जो कि कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 18 प्रतिशत है। हमारे देश में कुल 726 जिले हैं, इन जिलों में से 106 जिलों में 33 प्रतिशत, 52 जिलों में 19 से 33 प्रतिशत तथा 216 जिलों में 1 से 19 प्रतिशत वन का क्षेत्रफल है। शेष जिलों में वन का क्षेत्रफल नही के बराबर है। योजना आयोग के एक अनुमान के अनुसार हमारे देश में लगभग पांच करोड़ हेक्टेयर बंजर भूमि हैं, जिसका 15 प्रतिशत क्षेत्र वृक्ष लगाकर सुधारा जा सकता है, जिसके लिये राष्ट्रीय बंजर भूमि विकास बोर्ड प्रयास कर रहा है।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

अनमोल वचन

दंड संपूर्ण जगत को नियम के अंदर रखने वाला है, यह धर्म की सनातन आत्मा है।
– महाभारत

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

आषाढ़ कृष्ण/शुक्ल विक्रम संवत 2083 ईस्वी सन् 2026

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
7 जुलाई 26	मंगलवार	आषाढ़ कृष्ण पक्ष-7	पंचक
8 जुलाई 26	बुधवार	आषाढ़ कृष्ण पक्ष-8	पंचक दिन तक
9 जुलाई 26	गुरुवार	आषाढ़ कृष्ण पक्ष-9/10	
10 जुलाई 26	शुक्रवार	आषाढ़ कृष्ण पक्ष-11	
11 जुलाई 26	शनिवार	आषाढ़ कृष्ण पक्ष-12	
12 जुलाई 26	रविवार	आषाढ़ कृष्ण पक्ष-13	प्रदोष व्रत
13 जुलाई 26	सोमवार	आषाढ़ कृष्ण पक्ष-14	
14 जुलाई 26	मंगलवार	आषाढ़ कृष्ण पक्ष-30	हरहारिणी अमावस्या
15 जुलाई 26	बुधवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-1	
16 जुलाई 26	गुरुवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-2	
17 जुलाई 26	शुक्रवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-3	
18 जुलाई 26	शनिवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-4	
19 जुलाई 26	रविवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-5	
20 जुलाई 26	सोमवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-6	

बीजोपचार के लिये करें सीड ट्रीटिंग ड्रम का उपयोग

- **डॉ. दीपक चौहान** (वैज्ञानिक-कृषि अभियांत्रिकी)
- **डॉ. मृगेन्द्र सिंह** (वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख)
- **डॉ. अल्पना शर्मा** (वैज्ञानिक)
- **डॉ. बृजकिशोर प्रजापति** (वैज्ञानिक)
- **भागवत प्रसाद पंद्रे** (कार्यक्रम सहायक)

कृषि विज्ञान केन्द्र, शहडोल (म. प्र.)
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म. प्र.)

हमारे देश के किसान भाई फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रयत्न करते हैं। फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक खेती का इस्तेमाल होता है। फसल उत्पादन करने के लिए बीज एक मूल उद्देश्य है, उत्पादकता बढ़ाने के लिए उत्तम बीज का होना भी आवश्यक है।

उत्तम बीजों के चुनाव के बाद उनका उचित बीजोपचार भी जरूरी है, क्योंकि बहुत से रोग बीजों से फैलते है। अत: रोगजनकों, कीटों एवं असामान्य परिस्थितियों से बीज को बचाने के लिए बीजोपचार एक महत्वपूर्ण उपाय है। यदि बीज का सही शोधन किया जाए व सही समय पर बुवाई की जाए तो बहुत ही अच्छी पैदावार पाई जा सकती है। आज ऐसे किसानों की संख्या बहुत अधिक है जो अनुपचारित बीज बोते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें खेती में अच्छा लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आधुनिक खेती हेतु किसान भाइयों के लिए सीड ट्रीटिंग ड्रम का उपयोग करना अति आवश्यक हैं।

क्या है सीड ट्रीटिंग ड्रम

सीड ट्रीटिंग ड्रम एक बीज उपचारक उपकरण है, जिसमें बीज और रासयनिक दवाइयों को यांत्रिक रूप से मिलाकर बीज का शोधन किया जाता है। यह उपकरण स्टैंड (फ्रेम), ड्रम, शाफ्ट (रॉड) और हैंडल (हत्थे) से मिलकर बना होता है। इस उपकरण का सबसे प्रमुख भाग ड्रम है, जिसे एक विशेष प्रकार की गैल्वेनाइज्ड चादर से बनाया गया है, गैल्वेनाइज्ड चादर होने के कारण इसकी ऊपरी सतह पर जंग नहीं लगता। साथ ही ड्रम के अंदर एक विशेष प्रकार की कोटिंग होने के कारण वह पूरी तरह चिपका और सुरक्षित होता है, चिपका होने के कारण बीज आंसानी से दवाई से मिल जाता है। साथ ही बीज की मिलावट एक जैसी ही होती है, व किसी प्रकार की कोई रूकावट बीज के शोधन में नहीं आती। ड्रम को इस तरह बनाया गया है कि बीज अंदर में सुरक्षित रहता है और टूटता भी नहीं, मूंगफली या किसी प्रकार का बीज भी इसमें आसानी से शोधन किया जा सकता है। ड्रम को स्टैंड (फ्रेम) के ऊपर सुरक्षित ढंग से फिट किया गया है, ड्रम के अंदर शाफ्ट की एक्सिस तिरछी होने के कारण ड्रम अद्ध गोलाई में घूमता है, इसलिए ड्रम में डाली हुई दवाईयां आसानी से बीज से लग जाती है। ड्रम के ऊपर लॉक करने की सुविधा दी गई है, जिससे बीज सुरक्षित रहता हैं साथ में बीज नीचे नहीं गिरते। इस उपकरण का स्टैंड भी काफी मजबूती से बना होता हैं एवं स्टैंड के चारों निचले हिस्से पर गोलाई वाला आधार दिया गया हैं, जिसके कारण उपकरण उबड़-खाबड़ जमीन, बारिश में भी समतल आधार पर बना रहता है।

इस उपकरण की क्षमता मानव क्षमता के ऊपर निर्भर करती है, फिर भी सामान्यत: 75 से 100 किलो/प्रति घंटा तक बीज का शोधन किया जा सकता है। एक ही बार में 15-20 किलो का शोधन बहुत ही सरल तरीके से किया जा सकता है। यह उठाने में हल्का होता है एवं इस उपकरण की अनुमानित कीमत लगभग 2500-3000 रुपये तक है।

सीड ट्रीटिंग ड्रम का उपयोग कैसे करें

- सीड ट्रीटिंग ड्रम का उपयोग करने से पूर्व यह देख लें की वह साफऔर सही अवस्था में हो।
- ड्रम के भीतरी हिस्से साफ ना होने पर उसे झाड़ू की सहायता से साफकरें। गीलें कपड़ों का प्रयोग बिल्कुल भी न करें, उससे इसके अंदर के भाग में जंग लग सकती है।
- सीड ट्रीटिंग ड्रम के सभी नट एवं बोल्ट को अच्छी तरह से जांच लें।
- ड्रम के बाहरी सतह में लगे लॉक को खोल लें।
- बीजोपचार हेतु बीज और जरूरत अनुसार रासायनिक दवाई/पाउडर को ड्रम में डाल दें एवं आवश्यकता पड़ने पर बहुत ही अल्प मात्रा में पानी डाल दें, ताकि बीज और रासयनिक दवाई/पाउडर का मेल सही तरीके से हो पाए।
- ड्रम को लॉक कर देवें।
- ड्रम को करीब 15-20 बार हैंडल के माध्यम से घुमाए।
- घुमाने के पश्चात ड्रम को 1-2 मिनट के लिए छोंड़ दें, ताकि रासयनिक दवाई अच्छे से बीज में लग जाए।
- ड्रम के ठीक नीचे एक बड़ा प्लास्टिक (पॉलिथीन) शीट/चादर या कंटेनर/बर्तन रखें।
- ड्रम के लॉक को खोल लें।
- उपचारित बीज को ड्रम से बाहर निकाल कर प्लास्टिक शीट या बर्तन में रखें एवं बचे हुए बीजों को झाड़ू की मदद से निकाल लें।

सीड ट्रीटिंग ड्रम से बीजोपचार के फायदे

- अधिक अंकुरण।
- अधिक प्रबल पौधे।
- आरम्भिक रोगों का प्रभावी नियंत्रण।
- दुबारा बुवाई करने की आवश्यकता नहीं।
- कम समय, श्रम एवं लागत।
- अधिक फसल उत्पादन।
- प्रतिकूल परिस्थितियों (कम/उच्च नमी) में भी एक समान फसल।

ध्यान रखने हेतु बातें

- बीजोपचार हेतु खरीदी गई दवाई की अंतिम तिथि अवश्य देख लें।
- रासायनिक दवाई का प्रसोग संस्तुत मात्रा में ही करें, कम या अधिक मात्रा में नहीं।
- बीज शोधन के समय हाथ में दस्ताने तथा चहरे पर साफ कपड़ा अवश्य बांधे।
- बीज शोधन के पश्चात हाथ-पांव व चेहरा साबुन से भली-भांति साफ कर लें।
- बीजोपचार के बाद उपचारित बीज को 4-5 घंटे के अंदर बुवाई कर दें।

एमएसपी पर मूंग उपार्जन का कार्य शुरू

नर्मदापुरम। जिले में समर्थन मूल्य पर मूंग उपार्जन का कलेक्टर सोमेश मिश्रा ने पूजा-अर्चना के साथ शुभारंभ किया। श्री मिश्रा ने उपार्जन केंद्र का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने किसानों से चर्चा कर उनकी समस्याएं सुनीं तथा अधिकारियों को निर्देश दिए कि खरीदी प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी, व्यवस्थित एवं किसान हितैषी तरीके से संचालित की जाए।

श्री मिश्रा ने बताया कि जिले में चरणबद्ध तरीके से सभी मूंग उपार्जन केंद्र प्रारंभ किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि उपार्जन केंद्रों पर भंडारण की पर्याप्त व्यवस्था की गई है। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने तौल व्यवस्था, गुणवत्ता परीक्षण, भंडारण सहित अन्य व्यवस्थाओं का भी अवलोकन किया।

- संदीप कुमार शर्मा
- डॉ. ब्रजेश कुमार तिवारी
- डॉ. संजय सिंह
- डॉ. अजय कुमार पांडेय

जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा (म.प्र.)

सोयाबीन का उत्पादन कैसे बढ़ाएं?

सोयाबीन विश्व की सबसे महत्वपूर्ण तिलहनी एवं ग्रंथिकुल फसल है। इसने देश की खाद्य तेल आवश्यकता की पूर्ति करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए सोया-खली के विदेशों में निर्यात से प्रतिवर्ष लगभग 8000 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त कर देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करती है।

इस फसल की व्यावसायिक खेती वर्तमान में मुख्य रूप से मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र राजस्थान, कर्नाटक एवं आंधप्रदेश में की जाती है। इसका पीत क्रांति में भी विशेष योगदान रहा है। सोयाबीन कम अंतराल (85-100 दिन) की होने के कारण फसल प्रणाली में अच्छी तरह समाहित हो जाती है। ग्रंथिकुल की फसल होने के कारण 60-100 कि.ग्रा./हे. की दर से वातावरण की नत्रजन को मृदा में स्थिर करती है। सोयाबीन फसल के निरंतर एवं अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु फसल प्रबंधन की निम्नलिखित अनुशंसाओं को अपनाने की सलाह इस प्रकाशन के माध्यम से दी जाती है:-

किस्मों का चयन

सोयाबीन के सतत् उत्पादन में टिकाउपन लाने के लिए यह आवश्यक है कि हमेशा 3-4 किस्मों की खेती की जाए। क्षेत्रवार अनुशंसित सोयाबीन की किस्मों में से अपने क्षेत्र के लिए उपयुक्त 3-4 किस्मों का चयन कर बीज उपलब्धता बोवनी से पहले ही सुनिश्चित कर लें।

- **मध्य क्षेत्र के लिए अनुशंसित किस्में:** जे.एस. 335, जे.एस. 93-05, जे.एस. 95-60, जे.एस. 97-52, जे.एस. 71-05, अहिल्या-3 (एन.आर.सी.7), अहिल्या -4 (एन.आर.सी. 37) आदि हैं।
- **मृदा:** सोयाबीन की खेती सभी प्रकार की मृदाओं में (अति-अम्लीय, क्षारीय व रेतीली मृदाओं का छोड़कर) की जा सकती है। मृदा में अच्छा जल निकास होना चाहिए तथा जैविक कार्बन की मात्रा भी अच्छी होनी चाहिए।
- **खेत की तैयारी:** फसल प्रबंधन के लिये 2 या 3 वर्ष में एक बार खेत की गहरी जुताई करना लाभकारी हैं। अत: गर्मी के मौसम में खेत की गहरी जुताई (30 से 45 से.मी.) के पश्चात विपरीत दिशा में बख्खर चलाएं एवं पाटा लगाकर खेत को समतल करें।
- **बोवनी का समय:** सोयाबीन मानसून आधारित खरीफ मौसम की फसल होने के कारण इसकी बोवनी वर्षा के आगमन पर निर्भर होती है। मध्य प्रदेश में जून माह के अंतिम सप्ताह से जुलाई माह के प्रथम सप्ताह का समय इसकी बोवनी हेतु उपयुक्त हैं।
- **बीज अंकुरण परीक्षण:** चयनित सोयाबीन की किस्मों के बीज का अंकुरण परीक्षण (न्यूनतम 70 प्रतिशत) कर इसकी गुणवत्ता बौवनी से पहले ही सुनिश्चित कर लें।
- **पौध संख्या एवं दूरी:** अधिक उत्पादन लेने हेतु सोयाबीन के एक हेक्टेयर क्षेत्र में लगभग 4-6 लाख पौधे होने चाहिए। अत: इसकी बोवनी हेतु कतार से कतार की दूरी 45 सेमी. तथा पौधे से पौधे के बीच की दूरी 5 से.मी. अनुशंसित की गई है।
- **बीज दर:** बीज का आकार एवं न्यूनतम 70 प्रतिशत अंकुरण के आधार पर सोयाबीन की विभिन्न किस्मों के लिए निम्नलिखित बीज दर अनुशंसित की गई है:-

छोटा दाना	:	60-65 कि.ग्रा./हे.
मध्यम दाना	:	70-75 कि.ग्रा/हे.
बड़ा दाना	:	80-85 कि.ग्रा/हे.

- **बोवनी का तरीका एवं गहराई:** सोयाबीन की बोवनी कतारों में करना अधिक लाभप्रद है। अत: दूफन/तिफन/ट्रैक्टर चलित सीडड्रिल का उपयोग करते हुए बीज को 3 से.मी. तक की गहराई पर बोवनी करें। मानसून की देरी या बोवनी में विलम्ब होने की स्थिति में जल्दी पकने वाली किस्मों का उपयोग कर कतार से कतार की दूरी 30 सेमी. तक घटाकर तथा बीज दर 25 प्रतिशत बढ़ाकर बोवनी करने की सलाह दी जाती है। बीज और खाद मिलाकर कभी भी बोवनी नहीं करें। तत्पश्चात् जल निकास हेतु खेत में उचित अंतराल पर नालिया बनाएं।

(शेष पृष्ठ 18 पर)

IPL
इंडियन पोटाश लिमिटेड

भारत यूरिया | भारत डी. ए. पी. | भारत एम. ओ. पी. | पॉलीहैलाइट | किसान मित्र गोल्ड | बायो पोटाश

आई. पी. एल. उर्वरक- समझदार किसानों की पहली पसंद

507-508, पांचवीं मंजिल, कॉरपोरेट जोन, आशिमा मॉल, नर्मदापुरम रोड,
भोपाल (म.प्र.) फोन : 0755-4053336, 4053337

धान का अधिक उत्पादन श्री विधि अपनाएं

● डॉ. शुभम मिश्रा
फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर
उच्च शिक्षा एवं उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

भारत वर्ष में धान की फसल लगभग 44.6 मिलियन हेक्टेयर में की जाती है, जिसका प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन 3.0 टन है जबकि चीन में 30.5 मिलियन हेक्टेयर में उगायी जाती है जिसकी प्रति हेक्टेयर औसत उपज 6.2 टन प्रति हेक्टेयर है।

प्रायः उत्पादन करने में जो विधि प्रयोग में लाते हैं वह उतनी उत्पादन देने में सक्षम नहीं है। जितनी की आज प्रचलित उत्पादन तकनीक श्री विधि (एस.आर.आई) से प्राप्त कर सकते हैं। इसको 'सिस्टम आफ राइस इंटेंसिफिकेशन' अथवा 'एस.आर.आई.' नाम से भी जाना जाता है। इस पद्धति का विकास विश्व में सर्वप्रथम फादर हेनरी डी लॉलेनि ने मैडागास्कर देश में किया था। इस पद्धति को अपनाने के दो प्रमुख उद्देश्य यह है कि धान के उत्पादन को बढ़ाया जाये और धान की जल मांग को कम किया जाये। विश्व के विभिन्न भागों में इस तकनीक को अपनाने से धान का उत्पादन दो से तीन गुना तक बढ़ा है। इस पद्धति द्वारा धान उगाने के लिए निम्न शस्य क्रियाएें एवं सिद्धांत है।

- **शीघ्र रोपाई:** धान को परंपरागत विधि से उगाने के लिए इसकी रोपाई 25-30 दिन पुरानी पौध से की जाती है जबकि धान सघनता पद्धति में पौध की उम्र समान्यत: 10-12 दिन अथवा अधिकतम 15 दिन पुरानी पौध की रोपाई खेत में लगाने के बीच कम से कम समय होना चाहिए। यानी पौध उखाड़ने के तुरंत बाद उसकी रोपाई करना आवश्यक है और पौध को उखाड़ते समय इसकी जड़ों को कोई क्षति नहीं पहुंचनी चाहिए। इस विधि से रोपाई करने से काफी संख्या में कल्ले निकलते हैं और मजबूत जड़ों का विकास होता है जो कि अधिक उत्पादन के लिए आवश्यक गुण है।
- **पौध संख्या एवं अंतरण:** धान सघनता पद्धति में रोपाई के लिए विभिन्न परिस्थितियों में पंक्ति एवं पौधे से पौधे की दूरी 25 ग 25 सें.मी. रखते हैं। इस वर्गाकार रोपाई विधि में एक जगह पर एक ही पौध लगाया जाता है। इस विधि द्वारा रोपी गई पौध की जड़ों एवं कल्लों के अच्छे विकास के लिए पर्याप्त जगह धूप, पोषक तत्व एवं पानी की उपलब्धता रहती है। उपरोक्त अनुकूल दशाओं के कारण प्रत्येक पौध से कल्लों का बहुत अधिक उत्पादन होता है जो धान की पैदावार बढ़ाने में काफी सहायक है।

धान की उपयुक्त किस्में

- **अतिशीघ्र पकने वाली किस्में (75 से 110 दिन):** जवाहर 201 (लम्बा पतला दाना, उपज 30-35 क्विं./हे.), जे आर 75 (मध्यम पतला दाना, उपज 30-35 क्विं./हे.)।
- **शीघ्र पकने वाली किस्में (115-125 दिन):** जवाहर 353 (लम्बा पतला दाना, उपज 35-40 क्विं/हे.), राशी (मध्यम पतला दाना, उपज 35-40 क्विं./हे.), जे.आर.201, (लम्बा पतला दाना, उपज 25-30 क्विं./हे.), जे.आर.353, (लम्बा पतला दाना, उपज 25-30 क्विं./हे.), अंनदा, (मोटा दाना, सूखा रोधक, उपज 30-35 क्विं./हे.), पी.एन.आर 381, (पतला दाना, सुखा रोधक उपज 40-45 क्विं./हे.)।
- **मध्यम समय में पकने वाली जातियां (130-140 दिन):** माधुरी (लम्बा पतला दाना, उपज 35-40 क्विं./हे.), क्रांति (मोटा गोल दाना, उपज 50-55 क्विं./हे.), पूसा बासमति (सुगंधित, लम्बा पतला दाना, उपज 30-35 क्विं./हे.), आई.आर. 64 (लम्बा पतला दाना, उपज 35-40 क्विं./हे.), आई.आर. 36 (लम्बा पतला दाना, उपज 40-50 क्विं./हे.) पूसा सुगंधा, (लम्बा पतला व सुगंधित दाना, उपज 40-45 क्विं./हे.)
- **देर से पकने वाली किस्में (145-155 दिन):** श्यामला (लम्बा पतला दाना, उपज 40-45 क्विं./हे.), स्वर्णा (लम्बा पतला दाना, उपज 50-55 क्विं./हे.)।
- **जल प्रबंधन:** धान सघनता पद्धति अथवा एस.आर.आई द्वारा धान की खेती में उपयुक्त जल प्रबंधक अति आवश्यक है। इस विधि को ऐसे क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अपनाया जा सकता है जहाँ सिंचाई जल की पर्याप्त व्यवस्था हो जिससे कि खेत में उचित नमी लगातार बनाये रखने के लिए आवश्यकतानुसार पानी दिया जा सके। मिट्टी को निश्चित अंतराल पर गीला एवं सूखा रखने से पौधों की जड़ों एवं कल्लों का विकास अधिक अच्छा होता है।
- **खरपतवार नियंत्रण:** इस विधि से उगाये गये धान में जलाक्रांत दशा नहीं होती है, इसलिए इसमें खरपतवारों की बढ़वार काफी अधिक होती है। अत: इनका नियंत्रण अति आवश्यक हो जाता है। एस.आर.आई. विधि के अनुसार धान में यांत्रिक विधि से खरपतवारों का नियंत्रण किया जाना चाहिए। इसके लिए हस्तचालित अथवा शक्ति चालित 'रोटेटिंग हो' का प्रयोग संस्तुत किया गया है। यांत्रिक खरपतवार नियंत्रण के दो प्रमुख लाभ है- पहला यह कि खरपतवार नष्ट होने से फसलों एवं खरपतवारों के बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं रहती, दूसरा यह कि ये मिट्टी में मिल जाते हैं तो सड़ने के बाद धान को पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं। इसके अलावा मिट्टी में वायु संचार बढ़ने से उसमें उपस्थित लाभदायक जीवों की संख्या में वृद्धि होती है जो मिट्टी के भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्मों में वृद्धि के लिए अति आवश्यक है।
- **खाद एवं उर्वरक प्रबंधन:** इस धान सघनता पद्धति में विभिन्न पोषक तत्वों का समुचित प्रबंधक फलदायक सिद्ध हुआ है। जहां तक संभव हो पोषक तत्वों की पूर्ति जैविक स्त्रोतों, जैसे कम्पोस्ट गोबर की खाद एवं हरी खाद आदि से की जानी चाहिए। यदि जैविक स्रोत पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न हो तो आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति उर्वरकों एवं जैविक स्त्रोतों दोनों के एकीकृत प्रयोग द्वारा की जा सकती है।

धान सघनता पद्धति के लाभ

- **अधिक पैदावार:** परंपरागत तरीके से उगाने की तुलना में देश व विदेश में धान को सघनता पद्धति से उगाने पर 1.5-3.0 गुनी तक अधिक पैदावार प्राप्त की गई है। उफोफ (2004) के अध्ययन के अनुसार आंध्र प्रदेश में किसानों के खेतों पर किये गये धान सघनता पद्धति परीक्षणों में परंपरागत विधि की तुलना में 1.15 से 4.73 टन प्रति हेक्टेयर अधिक पैदावार प्राप्त की गई है।
- **जल की बचत:** धान सघनता पद्धति से धान उगाने पर परंपरागत धान पद्धति की अपेक्षा 30-50 प्रतिशत कम पानी की आवश्यकता होती है। अत: कम पानी की उपलब्धता की दशा में धान सघनता पद्धति को आसानी से अपनाया जा सकता है।
- **फसल का न गिरना:** चूंकि इस पद्धति से उगाये गये धान की जड़ें एवं कल्ले काफी मजबूत होते हैं, इसलिए धान की फसल खेत में सीधी खड़ी रहती है और गिरती नहीं है।

(शेष पृष्ठ 16 पर)

बरसात के मौसम में खेत का सही प्रबंधन

जलभराव, पोषक तत्वों की हानि और फसल बचाने के उपाय

- **बादल वर्मा**
  सस्य विज्ञान विभाग, भाकृअनुप खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर (म.प्र.)
- **मुस्कान पोरवाल**
  सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ अधिकांश किसान खरीफ फसलों की खेती के लिए मानसूनी वर्षा पर निर्भर रहते हैं। सामान्य और समय पर होने वाली वर्षा किसानों के लिए वरदान साबित होती है, क्योंकि इससे फसलों की वृद्धिए विकास और उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

लेकिन पिछले कुछ वर्षों में जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। कहीं बहुत कम वर्षा हो रही है तो कहीं कुछ ही दिनों में अत्यधिक वर्षा होने से खेतों में जलभराव की स्थिति बन जाती है। ऐसी परिस्थितियाँ किसानों के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी कर रही हैं। विशेष रूप से जुलाई और अगस्त के महीनों में लगातार होने वाली वर्षा के कारण खेतों में पानी भर जानाए मिट्टी का कटाव, पोषक तत्वों का बहाव तथा विभिन्न कीट एवं रोगों का प्रकोप बढ़ जाना आम समस्या बन चुकी है।

यदि किसान बरसात के मौसम में वैज्ञानिक तरीकों से खेत का प्रबंधन करें तो इन समस्याओं से काफी हद तक बचा जा सकता है। समय पर लिए गए छोटे-छोटे निर्णय फसल को नुकसान से बचाने के साथ-साथ उत्पादन और लाभ दोनों बढ़ा सकते हैं।

जलभराव क्यों है नुकसानदायक

अनेक किसान यह मान लेते हैं कि अधिक पानी का अर्थ बेहतर फसल है, जबकि अधिकांश खरीफ फसलों के लिए यह धारणा सही नहीं है। धान जैसी कुछ फसलों को छोड़ दें तो सोयाबीन, मूंगफली, मक्का, कपास, तिल, अरहर, उड़द और मूंग जैसी फसलें लंबे समय तक जलभराव सहन नहीं कर पातीं।

जब खेत में लगातार पानी भरा रहता हैए तब मिट्टी के कणों के बीच मौजूद वायु समाप्त हो जाती है। परिणामस्वरूप जड़ों को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिलती, जिससे उनकी वृद्धि रुक जाती है। पौधों की जड़ें कमजोर होने लगती हैंए पोषक तत्वों का अवशोषण कम हो जाता है और पौधे पीले पड़ने लगते हैं। यदि जलभराव कई दिनों तक बना रहेए तो जड़ गलन, तना गलन तथा अन्य फफूंदजनित रोग तेजी से फैल सकते हैं। कई बार पौधे पूरी तरह नष्ट भी हो जाते हैं। इसी कारण कृषि वैज्ञानिक सलाह देते हैं कि अधिकांश खरीफ फसलों में वर्षा का अतिरिक्त पानी 24 से 48 घंटे से अधिक खेत में नहीं रुकना चाहिए।

खेत में प्रभावी जल निकासी सबसे पहली आवश्यकता

अच्छी खेती का अर्थ केवल समय पर बुवाई और उर्वरक देना नहीं हैए बल्कि खेत में अतिरिक्त पानी को समय पर बाहर निकालना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। बारिश शुरू होने से पहले ही खेत की मेड़ों और निकास नालियों की मरम्मत कर लेनी चाहिए। जिन खेतों में पानी भरने की संभावना अधिक रहती है, वहाँ मुख्य नाली के साथ छोटी-छोटी सहायक नालियाँ बनाना लाभदायक रहता है। इससे वर्षा का अतिरिक्त पानी शीघ्र बाहर निकल जाता है।

मध्यम एवं भारी मिट्टी वाले क्षेत्रों में रिज एवं फरो तथा ब्रॉड बेड एवं फरो पद्धति अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है। इन तकनीकों से एक ओर जलभराव कम होता है, वहीं दूसरी ओर वर्षा जल का बेहतर उपयोग भी संभव हो पाता है। खेत का समतलीकरण (लेवलिंग) भी जल प्रबंधन का महत्वपूर्ण भाग है, क्योंकि असमतल खेतों में पानी एक स्थान पर अधिक समय तक जमा रहता है।

पोषक तत्वों की हानि क्यों होती है

लगातार वर्षा होने पर मिट्टी में उपस्थित नाइट्रोजन, सल्फर, पोटाश तथा अन्य घुलनशील पोषक तत्व पानी के साथ नीचे की परतों में चले जाते हैं या बह जाते हैं। इसे पोषक तत्वों का लीचिंग या बहाव कहा जाता है। परिणामस्वरूप पौधों को पर्याप्त पोषण नहीं मिल पाता और उनकी वृद्धि प्रभावित होती है। कई बार किसान यह समझ नहीं पाते कि पौधे पीले क्यों पड़ रहे हैं। वे बार.बार उर्वरक डाल देते हैं, जबकि समस्या का कारण पोषक तत्वों का असंतुलन या बहाव होता है।

इस स्थिति से बचने के लिए नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग एक साथ करने के बजाय विभाजित मात्रा (स्प्लिट डोज) में करना चाहिए। इससे पौधों को आवश्यकता के अनुसार पोषण मिलता रहता है और उर्वरकों की उपयोग दक्षता भी बढ़ती है।

वर्षा के बाद खेत का निरीक्षण क्यों आवश्यक है

बारिश रुकने के बाद खेत का निरीक्षण करना उतना ही आवश्यक है जितना कि बुवाई के समय खेत की तैयारी करना। निरीक्षण के दौरान सबसे पहले यह देखें कि कहीं पानी जमा तो नहीं है। यदि जलभराव दिखाई दे तो तुरंत निकासी की व्यवस्था करें। तेज वर्षा के कारण यदि पौधे गिर गए हों तो उन्हें सावधानीपूर्वक सीधा करें। जहाँ पौधे बह गए हों या नष्ट हो गए होंए वहाँ शीघ्र अंतरपूर्ति करें ताकि पौधों की संख्या बनी रहे। साथ ही पौधों की पत्तियों का रंग, उनकी वृद्धि तथा रोग या कीट के लक्षणों का भी निरीक्षण करें। समय पर पहचान होने पर कम लागत में समस्या का समाधान संभव हो जाता है।

मिट्टी का कटाव रोकना भी उतना ही जरूरी

मिट्टी की ऊपरी परत सबसे अधिक उपजाऊ होती है। इसी परत में जैविक पदार्थ, सूक्ष्मजीव तथा अधिकांश पोषक तत्व मौजूद रहते हैं। तेज वर्षा होने पर यही उपजाऊ मिट्टी पानी के साथ बह जाती हैए जिससे खेत की उत्पादकता धीरे-धीरे कम होने लगती है।

मिट्टी कटाव रोकने के लिए खेत की मेड़बंदी मजबूत रखें। ढलान वाले क्षेत्रों में समोच्च खेती घास की पट्टियाँ तथा वर्षा जल संरक्षण के उपाय अपनाना लाभदायक रहता है। जिन किसानों ने खेतों में मेड़बंदी और जल संरक्षण संरचनाएँ विकसित की हैं, उनके खेतों में न केवल मिट्टी सुरक्षित रहती है बल्कि नमी भी अधिक समय तक बनी रहती है।

खरपतवार और रोगों पर रखें विशेष नजर

बरसात का मौसम खरपतवारों के लिए सबसे अनुकूल माना जाता है। यदि समय पर नियंत्रण न किया जाए तो खरपतवार फसल के साथ पानीए पोषक तत्व, प्रकाश और स्थान के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे उत्पादन में 30 से 70 प्रतिशत तक की कमी आ सकती है।

(शेष पृष्ठ 18 पर)

लाभदायक अरहर की खेती

- **डॉ. कैलाश नारायण गुप्ता**
  वरिष्ठ वैज्ञानिक, पौधा रोग
  जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि, जबलपुर (म.प्र.)
- **डॉ. शुभम मिश्रा**
  फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर
  उच्च शिक्षा एवं उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

अरहर खरीफ ऋतु में पैदा की जाने वाली दलहन की अति महत्वपूर्ण फसल है। मध्यप्रदेश में इसकी खेती पर्याप्त क्षेत्रफल में होती है और पिछले एक दशक में किसानों का रुझान इसकी खेती की तरफ बढ़ा है।

विशेषकर ऐसे क्षेत्रों जहां पर कि सिंचाई की पर्याप्त सुविधा नहीं है। इसके उत्पादन एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी के लिए उपयुक्त किस्मों एवं सस्य पद्धतियों के चयन बेहद महत्वपूर्ण है। अरहर की विभिन्न किस्मों की उत्पादन क्षमता 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है, जबकि प्रदेश में इसकी औसत उत्पादकता 10 से 11 क्विंटल प्रति हेक्टेयर ही है। इसलिये आवश्यक है कि अरहर उत्पादन हेतु समग्र रूप से सस्य क्रियाओं एवं कीट व्याधि का प्रबंधन एक साथ अपनाया जाए जिससे इस फसल की अधिकतम उत्पादन क्षमता को हासिल किया जा सके।

अरहर की उन्नत किस्में

- **कम अवधि में पकने वाली किस्में (140-160 दिन):** आई.सी.पी.एल.-87 (प्रगति), आई.सी.पी.एल.-151 (जाग्रति), टाईप-21, खरगोन-2 आदि।
- **मध्यम अवधि में पकने किस्में (160-200 दिन):** जवाहर अरहर- 4, नम्बर- 148, खरगोन-1, जवाहर अरहर- 3
- **देर से पकने वाली किस्में (200-270 दिन):** ग्वालियर-3, एन.पी.- 151, पूसा-9, नरेन्द्र अरहर-1
- **खेत की चयन एवं तैयारी:** अरहर की फसल हेतु ऐसी मृदा आवश्यक है जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो। चूंकि खेत में पानी भरने पर फसल को भारी क्षति होने की आशंका रहती है। अरहर में मृदा जनित रोग से बचाव हेतु एक ही खेत में लगातार कई वर्षों तक अरहर नहीं उगानी चाहिए। बुवाई करने से पूर्व खेत की एक बार गहरी जुताई करके 02-03 बार हैरो चलाकर मिट्टी को भुरभुरी कर लेना चाहिए। इसके बाद खेत बुवाई के लिए तैयार हो जाता है। बुवाई के समय खेत में पर्याप्त नमी का होना अति आवश्यक है।
- **बुवाई का समय:** मुख्यता फसल पकने की अवधि के आधार पर अरहर को विभिन्न भागों में बांटा गया है। कम अवधि में पकने वाली(110-160दिन), मध्यम अवधि में पकने वाली (160-200 दिन) एवं देर से पकने वाली (200-270 दिन)।
- **बुवाई की विधि:** अरहर की फसल का अधिकतम उत्पादन लेने हेतु यह आवश्यक है कि बोये गये क्षेत्र में पौधों की पर्याप्त संख्या है। बुवाई में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 से 50 से.मी. एवं पौधों की दूरी 15 से 20 सें.मी. रखनी चाहिए।
- **मेड़ों पर अरहर की बुवाई:** इसके लिए आवश्यक है कि पर्याप्त दूरी पर 8-10 इंच ऊंची मेड़ बना लें तथा उन पर लाइनों में इस प्रकार बुवाई करें कि पौधों की एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी उचित बनी रहे।
- **बीज शोधन:** अरहर की फसल में बुवाई से पूर्व बीज को अवश्य ही शोधित कर लेना चाहिए ताकि कवक जनित बीमारियों से फसल को बचाया जा सके। बीज शोधन हेतु प्रति किलोग्राम बीज की मात्रा में 2.5 ग्राम थीरम व 1.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम को अच्छी तरह मिलाए जिसमें दबा बीजों की सतह पर अच्छी तरह चिपक जाए। इस प्रक्रिया को बुवाई से 8 से 10 दिन पूर्व कर बीज की बुवाई हेतु रख दें।
- **बीजोपचार:** अरहर की फसल में जीवाणुधारी गाठों के विकास को सुनिश्चित करने हेतु बीज राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना जरूरी होता है। इसके लिए 10 किलोग्राम बीज को एक पैकेट कल्चर (200 ग्राम) के साथ उपचारित करना चाहिए। कल्चर को बीज में मिलाने हेतु आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ अथवा चीनी का घोल बनाकर उबाल लें और ठंडा कर ले तदोपरांत उसमें राइजोबियम कल्चर को मिलाकर इस मिश्रण को बीज के ऊपर छिड़क कर हाथ से इस तरह मिला दें कि पूरे बीज में कल्चर चिपक जाए। बुवाई से 7-8 घंटे पूर्व ऐसा करके बीज को छाया में सूखा दें और बाद में बुवाई कर दें।
- **उर्वरक प्रबंधन:** अरहर दलहन वर्ग की फसल है। जिसमें नत्रजन की आवश्यकता कम पड़ती है, क्योंकि इसकी जड़ों में पाये जाने वाले जीवाणु वायुमंडल में नाईट्रोजन अवशोषित कर फसल को पहुंचाते रहते हैं, परन्तु जब तक कि जड़ों में जीवाणुधारी गांठों का पूर्ण विकास नहीं हो जाता है तब तक इसको नाईट्रोजन की आवश्यकता होती है। यह अवधि 40-45 दिन की होती है इस अवधि में पौधे के पोषण हेतु 20 कि.ग्रा. नेत्रजन प्रतिशत हेक्टेयर की भी आवश्यकता होती है। उपरोक्त उर्वरकों की पूरी मात्रा बुवाई के समय ही दें। बुवाई के समय 15-20 से.मी. की गहराई पर कुंड में उर्वरक देने से पौधों द्वारा उर्वरकों का अधिकतम उपयोग कर लिया जाता है।
- **जल प्रबंधन:** अरहर खरीफ ऋतु की फसल है। इसमें प्राय: सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। यदि वर्षा नहीं होती है तो फसल को 1 अथवा 2 सिंचाई पर्याप्त होती है। यदि सितंबर माह के बाद वर्षा न हो तो फूल आने व दाना बनने की अवस्था पर एक अतिरिक्त हल्की सिंचाई करना लाभदायक रहता है। सिंचाई के दौरान यह अवश्य ध्यान रखें कि खेत में पानी न भरे इसके अलावा वर्षा के पानी के निकास की भी समुचित व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए।
- **खरपतवार प्रबंधन:** अरहर की फसल में पौधों की बढ़वार को समान्य रखने हेतु आरंभिक 30-40 दिन तक खरपतवारों की रोकथाम अति आवश्यक है। इसके लिए फसल में खुरफा द्वारा पहली गुड़ाई बुवाई के लगभग 20 दिन एवं दूसरी 40 दिन बाद करें खरपतवारनाशी रसायनों द्वारा भी खरपतवार को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है। बुवाई के तुरंत जमाव के पूर्व पैन्डीमिथलिन की 3.3 कि.ग्रा. क्रियाशील अवयव की मात्रा 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए।

पादप सुरक्षा कैसे करें?

अरहर के प्रमुख हानिकारक कीट

- **फली की मक्खी (तुरपाड फ्लाई):** यह अरहर का प्रमुख हानिकारक कीट है। इस कीट के शिशु जिसे मैगेट करते हैं, फलियों के अन्दर घुसकर खाते हैं। कीट से ग्रसित फलियां प्राय: टेढ़ी-मेढ़ी हो जाती हैं।
- **प्रबंधन:** ग्रसित फलियों को प्रारम्भ में विशेषकर दिसम्बर-जनवरी में तोड़कर जला देना चाहिए। कटाई के उपरांत खेत में फसल के अवशेषों का एकत्र कर नष्ट कर देना चाहिए। अधिक प्रकोप की दशा में न्यूवाक्रान 800 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।
- **फली छेदक:** यह कीट अरहर की फलियों, फूलों एवं पत्तियों को क्षतिग्रस्त करता है।

(शेष पृष्ठ 20 पर)

TROPICAL AGRO
मप्र शाखा कार्यालय- 105 कॉर्पोरेट हाउस, 169 आर.एन.टी.मार्ग, इंदौर (म.प्र.)
फोन: 0731-4045702 E-mail:indore@tropicalagro.com

● डॉ. प्रद्युम्न सिंह
कृषि महाविद्यालय, खंडवा (म.प्र.)

उन्नत तरीके से करें गेंदा की खेती

गेंदा एक प्रमुख व्यावसायिक फूलों वाली फसल है जिसकी खेती देश के विभिन्न भागों विशेष रूप से मैदानी क्षेत्रों में खुले फूलों की बिक्री के लिए वर्षभर की जाती है। मध्यप्रदेश की जलवायु विशेषकर मालवा क्षेत्र की जलवायु पुष्प उत्पादन के लिए अनुकूल होने के कारण यदि किसान भाई गेंदा की खेती करें तो यह आमदनी का अच्छा साधन बन सकता है। गेंदा जाति के पौधे अन्य फूल जातियों की अपेक्षा अधिक सूखा सहन करने की क्षमता भी रखते हैं।

गेंदे की फूल, पंखुड़ी तथा पत्तियों सभी का आर्थिक महत्व है। इसके फूलों का उपयोग माला बनाने, फूलदानों में सजाने, क्यारियों में उगाने तथा विभिन्न प्रकार की पुष्प सज्जा में किया है। इसके अतिरिक्त इनके फूलों तथा पत्तियों का उपयोग सुगंधित तेल, उच्चकोटि का इत्र तैयार करने, विभिन्न रंग बनाने, बेकरी उद्योग तथा मुर्गियों के आहार में भी प्रमुख रूप से किया जाता है। साथ ही साथ इनका उपयोग टमाटर में फल छेदक कीट तथा निमोटोड के नियंत्रण के लिए प्रपंच फसल के रूप में भी किया जाता है। यदि टमाटर की प्रत्येक 16 क्यारी के बाद गेंदा की एक क्यारी लगा दी जाय तो इन कीटों का रोकथाम किया जा सकता है। गेंदा की खेती से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए किसान यदि वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग अपनी खेती में करें तथा खेती में उन्नत किस्म, गुणवत्तायुक्त बीज, स्वस्थ पौध तैयार करने की तकनीक, संतुलित खाद व उर्वरक तथा एकीकृत कीट व रोग नियंत्रण का समावेश करें तो निश्चित रूप से अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

किस्में : पुष्पोत्पादन की दृष्टि से दो प्रकार का गेंदा प्रचलित है।

अफ्रीकन गेंदा : अफ्रीकन गेंदा के पौधे 90-95 सेमी तक लंबे तथा बड़ी-बड़ी शाखाओं वाले होते हैं। फूलों का रंग पीला, सुनहरा पीला, नारंगी, सफेद आदि होता है। इनकी किस्मों को फूलों के आकार के आधार पर बांटा गया है। बड़े फूल वाली किस्मों में क्लाइमैक्स, गोल्ड कॉयन, जिनिया गोल्ड, पैलो सुपरिम, सन जायंट, मैन इन द मून प्रमुख हैं। मध्यम आकार की फूल वाली किस्मों में हैप्पी फेस, जुबली सीरिज, लोडी गोल्ड गैलोर है। छोटे आकार के फूल वाली किस्मों में अपोलो, स्पन पीला, डोली, ऐल सीरिज, एजटैक मुख्य है।

फ्रेंच गेंदा : फ्रेंच गेंदा के पौधे अफ्रीकन गेंदा की अपेक्षा छोटे तथा फूल भी आकार में छोटे होते हैं। इस जाति के पौधों की वृद्धि तीव्र गति से होती है। इस कारण फसल अफ्रीकन गेंदे की अपेक्षा शीघ्र आ जाती है। फ्रेंच गेंदा की प्रमुख किस्मे हैं - लैम, लेमिंग फायर डबल, रस्टी रैड, गोल्ड, जिप्सी, आरेंज लैम, स्पार्की, बोलेरो गोल्डन बाय, स्पेनिश ब्रोकैड आदि। इन किस्मों के अलावा कुछ संकर किस्में भी प्रचलित हैं। इन संकर किस्मों में पूसा नारंगी गेंदा और पूसा बसंती गेंदा मुख्य है।

पूसा नारंगी गेंदा किस्म का विकास भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा दो विदेशी किस्मों क्रैकर जैक तथा गोल्डन जुबली किस्मों के संकरण से किया गया है। इसके पौधे 80-85 सेमी लंबे होते है तथा बुआई के 125-135 दिन बाद फूल आने शुरू हो जाते है। 45-60 दिन तक फूल आते हैं। उपज 25-30 टन/हे. तक प्राप्त होती है।

पूसा बसंती गेंदा किस्म भी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा गोल्डन यलो तथा सन जांइट के संकरण द्वारा विकसित की गई है। इनकी ऊंचाई 60-65 सेमी होती है तथा बोने के 135-145 दिनों बाद फूल आना शुरू हो जाते हैं। पुष्पोत्पादन की अवधि 45 से 60 दिनों तक होती है। इन किस्मों के अलावा भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर से अफ्रीकन गेंदा की कार्नेशन लावर्ड, क्राइसैंथेमस लावर्ड, टॉल एफ-1 हाईब्रीड, सेमी टॉल एफ-1 हाईब्रीड, ड्वार्फ एफ-1 हाईब्रीड तथा फ्रेंच गेंदा की ड्वार्फ डबल, ड्वार्फ डबल पेटाईल, फ्रेंच ड्वार्फ सिंगल आदि किस्में विकसित की गई है।

भूमि : गेंदे की खेती वैसे तो सभी प्रकार की और कम उपजाऊ भूमि में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है लेकिन अधिक पैदावार लेने के लिए अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट मिट्टी सर्वोत्तम होती है।

बीज बोने का समय : गेंदे को साल में 3 बार लगाया जा सकता है। गर्मी में बीज बोने का उचित समय जनवरी फरवरी, बारिश में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई का प्रथम सप्ताह और रबी में मध्य सितंबर होता है।

बीज दर : संकर किस्मों के लिए 700-800 ग्राम तथा अन्य किस्मों के लिए 1.25 किग्रा बीज/ हेक्टेयर पर्याप्त होता है।

नर्सरी तैयार करना : बारिश में नर्सरी के लिए क्यारियां तैयार करते समय मिट्टी में प्रति वर्ग मीटर की दर से 2 किग्रा अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद या आधा किग्रा केंचुआ खाद मिलाकर लगभग 1 मीटर चौड़ी, 15 सेमी उठी हुई तथा सुविधानुसार लंबाई की क्यारी बना लें। यदि मिट्टी भारी हो तो प्रति वर्ग मीटर के हिसाब से बालू मिला लें जिससे की अंकुरण में कोई समस्या न आए। बोने से पूर्व क्यारियों को केप्टान, थायरम या बाविस्टिन से 5 से 6 ग्राम प्रति वर्ग मीटर के हिसाब से ड्रेचिंग कर लें जिससे की भूमि जनित कीटाणुओं से रक्षा हो सके। इसके अलावा यदि मिट्टी में कोई कीट या उनके अंडे उपस्थित हो तो उनके नियंत्रण के लिए क्लोरोपाइरीफास दवा को 2 मिली/लीटर पानी में घोलकर क्यारी में छिड़काव कर दें। इसके बाद बीजों को भी किसी फफूंदीनाशक जैसे थायरम या बाविस्टिन से 3 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित अवश्य करें। फिर बीजों को 2 से 3 सेमी की गहराई पर 10 सेमी की दूरी पर पंक्तियों में बुवाई कर देना चाहिए। बीज बोने के लगभग 30 दिन बाद पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं।

खेत की तैयारी : पौध की रोपाई के लगभग 15 दिन पहले भूमि की मिट्टी पलटने वाले हल से दो से तीन बार अच्छी तरह जुताई कर लें तथा मिट्टी में 30 टन/ हेक्टेयर की दर से अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद मिला लें।

खाद एवं उर्वरक : अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए नाइट्रोजन 200 किग्रा/ हेक्टेयर, फास्फोरस 80 किग्रा/ हेक्टेयर और पोटाश की भी 80 किग्रा/हेक्टेयर की जरुरत होती है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा यानि 100 किग्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय मिट्टी में डालकर अच्छी तरह मिला देना चाहिए। नाइट्रोजन की शेष मात्रा रोपाई के 30 दिन बाद देना चाहिए।

दूरी : गेंदे को लगाने की दूरी लगाए जाने वाले किस्मों पर निर्भर करती है। अफ्रीकन गेंदा के लिए कतार से कतार की दूरी 40 सेमी और पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी तथा फ्रेंच गेंदा के लिए कतार से कतार की दूरी 20 सेमी और पौधे से पौधे की दूरी 20 सेमी दूरी अच्छी होती है।

सिंचाई : गेंदे की फसल में सिंचाई का विशेष महत्व है। सिंचाई का समय तथा सिंचाई की मात्रा मिट्टी की किस्म और उसे लगाए जाने वाले मौसम पर निर्भर करता है। हल्की भूमि में भारी भूमि की अपेक्षा नियमित अंतराल पर सिंचाई करना चाहिए। गर्मियों में 4 से 5 दिन के अंतराल पर तथा सर्दियों में 8 से 10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करना चाहिए। बारिश में यदि वर्षा न हो तो आवश्यकतानुसार सिंचाई करना चाहिए।

निराई गुड़ाई/खरपतवार नियंत्रण : खरपतवार गेंदे की फसल के साथ नमी, पोशक तत्वों, स्थान आदि के लिए प्रतिस्पर्धा करके उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इसलिए इनकी रोकथाम के लिए समय समय पर हाथों से खरपतवारों को उखाड़ते रहना चाहिए। चूंकि हाथों से खरपतवारों को निकालने में अधिक समय और अधिक पैसा खर्च होता है,

(शेष पृष्ठ 16 पर)

संतुलित उर्वरक प्रबन्धन एवं उसके उपयोग

- **डॉ. अजय कुमावत,** विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान विज्ञान)
- **श्री हरीश कुमार राछोया,** विषय वस्तु विशेषज्ञ (शस्य विज्ञान)

कृषि विज्ञान केंद्र चूरू-प्रथम
गांधी विद्या मंदिर सरदारशहर (राज.)

हरित क्रांति भारत के कृषि इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई। 1960 के दशक के मध्य में चावल और गेहूं की उर्वरक (प्रतिक्रियाशील उच्च उपज वाली किस्मों) का परिचय, सिंचाई के विस्तार और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग के साथ देश को आवश्यकता-आधारित स्थिति से आत्मनिर्भर और बाद में खाद्यान्न निर्यातक राष्ट्र में बदल दिया।

खाद्यान्न उत्पादन में इस तीव्र वृद्धि ने न केवल राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की, बल्कि भूख को कम करने और ग्रामीण आजीविका में सुधार करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। हालांकि इस उत्पादन वृद्धि के पीछे जो तीव्र कृषि प्रणाली, नाइट्रोजन उर्वरकों पर अत्यधिक निर्भरता और जैविक खादों के कम उपयोग के कारण पोषक तत्वों का असंतुलन पैदा हुआ और मिट्टी के स्वास्थ्य में गिरावट आने लगी। उर्वरकों के अत्यधिक और असंतुलित उपयोग से द्वितीयक एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी बढ़ी, मिट्टी की संरचना खराब हुई तथा पोषक तत्वों का बहाव और रिसाव बढ़ गया। इन परिस्थितियों में संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन का महत्व बढ़ गया है। इसमें रासायनिक उर्वरकों, जैविक खादों, बायोफर्टिलाइजर और फसल अवशेषों का संतुलित एवं समन्वित उपयोग शामिल है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बनाए रखी जा सके और टिकाऊ उत्पादन सुनिश्चित किया जाता।

संतुलित उर्वरीकरण: सतत कृषि की कुंजी

- **उर्वरक क्या हैं:** उर्वरक वे पदार्थ होते हैं, चाहे प्राकृतिक हों या कृत्रिम, जिन्हें मिट्टी में एक या अधिक पौध पोषक तत्वों की आपूर्ति के लिए मिलाया जाता है।

  उर्वरकों को मुख्य रूप से दो वर्गों में बांटा जाता है-

अकार्बनिक (रासायनिक) उर्वरक

ये मानव द्वारा बनाए गए रासायनिक यौगिक होते हैं, जिनमें विशिष्ट पोषक तत्व उच्च सघनता में पाए जाते हैं। ये फसलों को तुरंत और सटीक मात्रा में पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं जिससे फसल की तेजी से वृद्धि होती है। जैसे- यूरिया, डीएपी इत्यादि।

कार्बनिक (जैविक) उर्वरक

ये प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त होते हैं जैसे कम्पोस्ट, गोबर खाद, फसल अवशेष, समुद्री शैवाल और हड्डी चूर्ण। ये पोषक तत्वों को धीरे-धीरे संतुलित रूप में उपलब्ध कराते हैं तथा मिट्टी की संरचना, कार्बनिक पदार्थ और सूक्ष्मजीव गतिविधि में सुधार करते हैं। इसमें पशु-आधारित उत्पाद जैसे ब्लड मील, फेदर मील और सींग/खुर चूर्ण भी शामिल होते हैं। इस प्रकार उर्वरक फसलों की वृद्धि, उत्पादन और मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन

संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन का मतलब है फसल को सही मात्रा में सभी जरूरी पोषक तत्व देना, ताकि पौधे उन्हें अच्छे से उपयोग कर सकें और नुकसान कम हो। इससे पौधे तेजी से और स्वस्थ तरीके से बढ़ते हैं जिससे उत्पादन और गुणवत्ता दोनों बेहतर होती है। अलग-अलग पोषक तत्व मिलकर काम करते हैं, जिससे फसल का विकास और भी अच्छा होता है। यह मिट्टी की उर्वरता को लंबे समय तक बनाए रखता है और मिट्टी में जैविक पदार्थ और सूक्ष्मजीवों को भी बढ़ाता है। सही पोषण देने से फसल की संभावित उपज और वास्तविक उपज के बीच का अंतर भी कम हो जाता है। इसके अलावा यह पर्यावरण को भी सुरक्षित रखता है क्योंकि इससे उर्वरकों का बहाव, पानी में रिसाव और गैसों का उत्सर्जन कम होता है। इसलिए संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन से अच्छी फसल, स्वस्थ मिट्टी और सुरक्षित पर्यावरण मिलता है।

संतुलित उर्वरक प्रबंधन के लाभ

संतुलित उर्वरक प्रबन्धन टिकाऊ खेती का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके कई फायदे हैं-

- **अधिक उत्पादन:** सभी पोषक तत्व सही मात्रा में मिलने से फसल अपनी पूरी क्षमता से बढ़ती है और ज्यादा उपज देती है।
- **उन्नत किस्मों का बेहतर प्रदर्शन:** नई प्रतिक्रियाशील उच्च उपज वाली किस्मों को सही पोषण मिलने पर वे ज्यादा अच्छा उत्पादन देती हैं।
- **उर्वरकों का बेहतर उपयोग:** जब सूक्ष्म पोषक तत्व भी मिलते हैं तो बड़े पोषक तत्वका उपयोग पौधे बेहतर तरीके से करते हैं, जिससे बर्बादी कम होती है।
- **फसल की गुणवत्ता और सहनशीलता में सुधार:** अच्छा पोषण मिलने से पौधे मजबूत होते हैं, रोग और सूखा जैसी परिस्थितियों को बेहतर सहन करते हैं और फसल की गुणवत्ता भी बढ़ती है।
- **मिट्टी का स्वास्थ्य बेहतर होता है:** संतुलित उर्वरीकरण से मिट्टी की उर्वरता, सूक्ष्मजीव गतिविधि, संरचना और पानी रोकने की क्षमता बढ़ती है।
- **पर्यावरण को कम नुकसान:** मृदा परीक्षण संतुलित उर्वरीकरण का आधार है मिट्टी को कम, मध्यम और उच्च पोषक स्तरों में वर्गीकृत किया जाता है। कमी होने पर उर्वरक मात्रा बढ़ाई जाती है और पर्याप्त होने पर घटाई जाती है, यह दृष्टिकोण मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना द्वारा समर्थित है, जो किसानों को खेत-विशिष्ट जानकारी प्रदान करता है।
- **लागत में बचत:** मृदा परीक्षण संतुलित उर्वरीकरण का आधार है मिट्टी को कम, मध्यम और उच्च पोषक स्तरों में वर्गीकृत किया जाता है। कमी होने पर उर्वरक मात्रा बढ़ाई जाती है और पर्याप्त होने पर घटाई जाती है। यह दृष्टिकोण मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना द्वारा समर्थित है, जो किसानों को खेत-विशिष्ट जानकारी प्रदान करता है।

संतुलित उर्वरीकरण की प्रक्रिया

मृदा परीक्षण संतुलित उर्वरीकरण का आधार है। मिट्टी को कम, मध्यम और उच्च पोषक स्तरों में वर्गीकृत किया जाता है। कमी होने पर उर्वरक मात्रा बढ़ाई जाती है और पर्याप्त होने पर घटाई जाती है, यह दृष्टिकोण मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना द्वारा समर्थित है, जो किसानों को खेत-विशिष्ट जानकारी प्रदान करता है।

- **समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन:** मृदा परीक्षण संतुलित उर्वरीकरण का आधार है मिट्टी को कम, मध्यम और उच्च पोषक स्तरों में वर्गीकृत किया जाता है। कमी होने पर उर्वरक मात्रा बढ़ाई जाती है और पर्याप्त होने पर घटाई जाती है, यह दृष्टिकोण मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना द्वारा समर्थित है, जो किसानों को खेत-विशिष्ट जानकारी प्रदान करता है।
- **तकनीक आधारित उर्वरक:** ये उर्वरक फसल और मिट्टी की जरूरत के अनुसार बनाए जाते हैं। हर खेत की मृदा के अनुसार अलग-अलग उर्वरक होते हैं जैसे जिंक, बोरॉन, सल्फर को यूरिया, डीएपी या एसएसपी के साथ मिलाना। इससे पोषक तत्वों की बर्बादी कम एवं फसल की बढ़वार बेहतर होती है।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

(पृष्ठ 4 का शेष)

जन-जन के जीवन से ...

अनुमान लगाया गया है कि पचास वर्ष पुराना वृक्ष 15.7 लाख रूपये के बराबर लाभ देता है। पीपल का एक परिपक्व वृक्ष 1712 किलोग्राम प्रति घंटे की दर से ऑक्सीजन देता है और 2252 किलोग्राम की दर से कार्बन डाई आक्साइड सोखता है। दो से तीन मीटर घनत्व वाले जामुन, पीपल, बरगद, नीम, आम के वृक्षों से 100 मीटर दूरी तक औसतन 1.5 से 2.5 डिग्री सेल्सियस तापमान कम हो जाता है। एक हेक्टेयर में लगे वृक्ष 30 से 50 टन उड़ती धूल प्रतिदिन सोख लेते हैं।

हमारे देश में 6,29,149 गांव है, जहां पर लगभग 70 प्रतिशत जनता रहती है। ग्रामीण निवासियों को जलाऊ लकड़ी के लिये जंगल पर निर्भर रहना पड़ता है। हमारे देश में संसार के 9 प्रतिशत पशु पाये जाते हैं, जिनके आहार के लिये जंगल का चारा ही मुख्य स्त्रोत है। वृक्ष प्रकृति की अद्भुत देन है। यदि किसी स्थान की सुंदरता बढ़ाना है तो वहां आप वृक्ष लगा दीजिये, सचमुच सुंदरता आ जायेगी। वृक्षों से आपकी राशि, नक्षत्र जुड़े हुये हैं:-

राशि, नक्षत्र और वृक्ष

वृक्ष	राशि	नक्षत्र	देवता
कुचिला	मेष	अश्विनी	अश्विनी
आंवला	मेष	भरणी	टाम
गूलर	मेष/वृष	कृतिका	अग्नि
जामुन	वृष	रोहिणी	ब्रम्हा
खैर	वृष/मिथुन	मृगशिरा	सोम
शीशम	मिथुन	आर्द्रा	रूद्र
बांस	मिथुन/कर्क	पुनर्वस	अदिति
पीपल	कर्क	पुष्य	वृहस्पति
नागकेसर	कर्क	अश्लेषा	सर्प
बरगद	सिंह	मघा	पितर
ढाक	सिंह	पू. फाल्गुनी	भग
पाकड़	सिंह/कन्या	उ. फाल्गुनी	अर्यमा
रीठा	कन्या	हस्त	सविता
बेल	कन्या/तुला	चित्रा	त्वष्टा
अर्जुन	तुला	स्वाती	वायु
कताई	तुला/वृश्चिक	विशाखा	इंद्राग्नि
मौल श्री	वृश्चिक	अनुराधा	मित्र
चीड़	वृश्चिक	ज्येष्ठा	इन्द्र
साल	धनु	मूला	निऋति
जलवेतस	धनु	पूर्वाषाढ़ा	जल
कटहल	धनु	उत्तराषाढ़ा	विश्वदेव
आक	मकर	श्रवण	विष्णु
खेजड़ी	मकर/कुंभ	धनिष्ठा	वसु
कदम	कुंभ	शतभिखा	वरूण
आम	कुंभ/मीन	पू. भाद्रपद	अजैकपद
नीम	मीन	उ. भाद्रपद	अर्हिवुध्न्य
महुआ	मीन	रेवती	पूषा

लकड़ी देने वाले वृक्षों की अहम भूमिका होती है, इसके लिये बबूल, शीशम, नीम, इमली तथा यूकेलिप्टस को लगाना चाहिये। घर की बागवानी के लिये नीबू, पपीता, आंवला, कटहल, आम, केला, संतरा आदि लगाना चाहिये। छत्तीसगढ़ वन सम्पदा का धनी है। ऐसा माना जाता है कि बस्तर शब्द की उत्पत्ति 'बांस' से हुई है, यहां के सागौन के वन प्रसिद्ध हैं। छत्तीसगढ़ का शिमला कहलाने वाला सरगुजा में भी पहाड़ों की वादियों के बीच में प्रचुर मात्रा में वन है।

संतोष सबसे बड़ा सुख है। 'संतोष परम सुख', मनुष्यों को फल-फूलों से लदे हुये पेड़ संतोष प्रदान करते हैं। इसलिये राष्ट्रीय वन महोत्सव, विश्व वानिकी दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, वसुंधरा दिवस मनाने के साथ ही साथ वृक्षारोपण कीजिये। भारत में एक से आठ जुलाई तक हर्ष-उल्लास के साथ राष्ट्रीय वन महोत्सव मनाया जाता है, जिसमें करोड़ों वृक्ष प्रति वर्ष लगाये जाते हैं, इसलिये राष्ट्रीय वन महोत्सव को 'अधिक वृक्ष लगाओ आंदोलन' की संज्ञा दी गई है। राष्ट्रीय वन महोत्सव का शुभारंभ वर्ष 1950 में तत्कालीन कृषि मंत्री श्री कन्हैया लाल मणिकलाल मुंशी ने किया था। तब से यह महोत्सव प्रति वर्ष मनाया जाता है, हर साल करोड़ों वृक्ष लगाने का लक्ष्य पूरा किया जा रहा है वृक्ष भविष्य है। वृक्ष आशा है। इसलिये प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वृक्षारोपण के पुनीत कार्य को लगन से करें तथा पुराने वृक्षों की देखभाल अवश्य करें। वृक्ष लगाना कठिन कार्य नहीं है, कठिन है उनकी देखभाल करना। पर्यावरण की रक्षा के लिये कृषि की अनुपयुक्त भूमि पर, सड़कों और नहरों के किनारे, पंचायत जमीनों, खेत की मेड़ों, गृह वाटिकाओं, मंदिरों में वृक्षारोपण कीजिये। कुओं और तालाबों के पास भी वृक्ष लगायें।

(पृष्ठ 13 का शेष)

संतुलित उर्वरक प्रबन्धन ...

- **मृदा परीक्षण पर आधारित उर्वरक:** मृदा परीक्षण संतुलित उर्वरीकरण का आधार है, मिट्टी को कम, मध्यम और उच्च पोषक तत्वों में विभाजित किया जाता है। कमी होने पर उर्वरक मात्रा बढ़ाई जाती है और पर्याप्त होने पर घटाई जाती है। यह विधि मृदा स्वास्थ्य कार्ड से जुड़ी हुई है, जिसमें किसानों को उनके अपने खेत की मिट्टी की पूरी जानकारी दी जाती है, ताकि वे सही मात्रा में उर्वरक इस्तेमाल कर सकें।

संतुलित उर्वरकों की भूमिका

पौधों को सभी आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराना

संतुलित उर्वरीकरण में मुख्य, द्वितीयक और सूक्ष्म सभी पोषक तत्व सही मात्रा में दिए जाते हैं, जिससे पौधे स्वस्थ रहते हैं।

- **मुख्य पोषक तत्व:** नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश।
- **द्वितीयक पोषक तत्व:** कैल्शियम, मैग्नीशियम, सल्फ।
- **सूक्ष्म पोषक तत्व:** जिंक, आयरन, मैंगनीज, कॉपर, बोरॉन, मोलिब्डेनम।

फसल की तेज और संतुलित वृद्धि

नाइट्रोजन पत्तियों की वृद्धि बढ़ाता है, फास्फोरस जड़ विकास और फूल-फल बनने में मदद करता है, जबकि पोटाश फसल की मजबूती और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।

उत्पादन और गुणवत्ता में सुधार

संतुलित पोषण देने से फसल की पैदावार में स्पष्ट वृद्धि होती है और दाने, फल व सब्जियों की गुणवत्ता (आकार, रंग, स्वाद, चमक व भंडारण क्षमता) बेहतर होती है। फसल की गुणवत्ता के लिए सल्फर जो कि तेल एवं प्रोटीन की मात्रा बढ़ाने में सहायक है (विशेषकर सरसों, दालों में) जिंक दानों का विकास और दाने की संख्या बढ़ाता है, बोरॉन फूल से फल बनने की प्रक्रिया को सुधारता है और आयरन पौधों में हरियाली (क्लोरोफिल) बढ़ाकर प्रकाश संश्लेषण को मजबूत करता है। इस प्रकार सभी पोषक तत्वों का संतुलित उपयोग करने से उत्पादन अधिक और गुणवत्ता बेहतर प्राप्त होती है।

मिट्टी की सेहत बनाए रखना

लगातार एक ही उर्वरक (जैसे यूरिया) के अधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता धीरे-धीरे घटती है, मिट्‌टी सख्त हो जाती है और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी होने लगती है। इसके विपरीत संतुलित उर्वरीकरण मिट्टी की संरचना, उर्वरता और जैविक सक्रियता को बनाए रखता है। इसमें जैविक खादों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। जैविक खाद जैसे गोबर खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद आदि मिट्टी में जैविक पदार्थ बढ़ाते हैं, जिससे मिट्टी भुरभुरी बनती है और पानी धारण करने की क्षमता बढ़ती है। ये खाद मिट्टी में लाभकारी सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ाते हैं, जो पोषक तत्वों को घुलनशील बनाकर पौधों को उपलब्ध कराते हैं।

पोषक तत्वों की कमी को रोकना

संतुलित उर्वरकों का उपयोग करने से पौधों को सभी आवश्यक पोषक तत्व सही मात्रा में मिलते हैं, जिससे विभिन्न प्रकार की कमी से होने वाले लक्षण नहीं दिखाई देते। जैसे- पत्तियों का पीला पड़ना (नाइट्रोजन की कमी), जड़ों का कमजोर विकास (फास्फोरस की कमी), पत्तियों का किनारों से सूखना या जलना (पोटाश की कमी), नई पत्तियों का पीला होना (आयरन की कमी) आदि समस्याएं नहीं आतीं। इससे पौधों की वृद्धि स्वस्थ रहती है और उत्पादन में वृद्धि होती है।

लागत में कमी और लाभ में वृद्धि

संतुलित एवं उचित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करने से अनावश्यक खर्च से बचाव होता है और उर्वरकों की बर्बादी नहीं होती। इससे उत्पादन लागत कम होती है तथा फसल की गुणवत्ता और उपज में वृद्धि होती है। परिणामस्वरूप किसान को अधिक लाभ प्राप्त होता है और खेती अधिक लाभकारी बनती है।

पर्यावरण संरक्षण

अधिक एवं असंतुलित उर्वरकों के उपयोग से मिट्टी की गुणवत्ता घटती है तथा जल स्रोत (भूजल, नहर आदि) प्रदूषित हो जाते हैं। संतुलित उर्वरीकरण अपनाने से पोषक तत्वों का सही उपयोग होता है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और जल प्रदूषण की समस्या कम होती है। इससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ टिकाऊ कृषि को बढ़ावा मिलता है।

सोयाबीन फसल के लिये किसानों को सम सामयिक सलाह

शाजापुर। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने सोयाबीन फसल के लिये महत्वपूर्ण सलाह जारी की।

- सोयाबीन की बुवाई केवल मानसून आने एवं कम से कम 100 मिमी वर्षा होने के बाद ही करें। प्रथम सप्ताह जुलाई तक बुवाई उपयुक्त है।
- मध्य प्रदेश के लिए अनुशंसित उन्नत किस्मों जेएस-24-33, जेएस-21-72, जेएस-23-03, जेएस-23-09, एनआरसी- 150, एनआरसी-165, एनआरसी-157 का प्रमाणित बीज उपयोग करें।
- बुवाई से पूर्व बीज का फफूंदनाशक, कीटनाशक, ब्रेडीराइजोबियम/पीएसएम जैविक कल्चर से उपचार अवश्य करें। इससे रोग, कीट एवं पौध संख्या में सुधार होता है।
- खेत में अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद/कम्पोस्ट 5-10 टन प्रति हेक्टेयर तथा बुवाई के समय 25:60:40:20 (एन:पी:के:एस) किग्रा प्रति हेक्टेयर की अनुशंसित मात्रा दें।
- बुवाई के बाद खेत में जल निकास हेतु 6-9 कतारों के अंतराल पर नालियां अवश्य बनाएं जिससे अधिक वर्षा का पानी निकल सके तथा सूखे की स्थिति में नमी संरक्षित रहे।

- यदि बुवाई के 10 दिन बाद खरपतवार दिखाई दें और पहले खरपतवारनाशी का प्रयोग न किया हो तो अनुशंसित खरपतवारनाशी का पर्याप्त पानी के साथ फ्लैट-फैन/फ्लड, जेट नोजल से छिड़काव करें या निंदाई-गुड़ाई करें।
- जिन खेतों में अंकुरण कम हुआ है, वहां गैप फिलिंग या पुनः बुवाई कर उचित पौध संख्या बनाए रखें।

खेत की मेड़ों अथवा नालियों में गेंदा या सुवा की बुवाई करें, जिससे हानिकारक कीट आकर्षित होकर उनका प्रबंधन आसान हो सके।

खरपतवार नियंत्रण हेतु मेटोलाक्लोंर 35.98 प्रतिशत, सल्फेंट्राजोन 11.5 प्रतिशत या डायक्लो सुलम, पेण्डींमिथालीन बोवनी के तुरंत बाद मात्रा 2.5 प्रति हेक्टेययर की दर से छिड़काव कर सकते हैं।

अधिक जानकारी एवं तकनीकी मार्गदर्शन हेतु अपने कृषि विज्ञान केंद्र, शाजापुर से संपर्क करें।

कम वर्षा की आशंका के बीच

आधुनिक कृषि तकनीक अपनाने की सलाह

शहडोल। कृषि विज्ञान केंद्र शहडोल एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में गोहपारू विकासखंड के ग्राम खैरवना एवं पैलवाह में किसानों के लिए जागरूकता अभियान एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अल-नीनो के प्रभाव तथा संभावित कम वर्षा की स्थिति को देखते हुए किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों एवं वैकल्पिक फसलों को अपनाने की सलाह दी गई।

कृषि वैज्ञानिक डॉ. बृजकिशोर प्रजापति ने किसानों को पारंपरिक रोपाई के बजाय डायरेक्ट सीडेड राइस पद्धति से धान की सीधी बुवाई करने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि इस तकनीक से 25-30 प्रतिशत तक पानी की बचत होती है, श्रम एवं लागत कम आती है तथा फसल 7 से 14 दिन पहले तैयार हो जाती है। उन्होंने कम अवधि वाली धान की किस्मों जेआर-206, जेआर-81, जेआर-10, आईआर-64, एमटीयू-1010 एवं एमटीयू-1156 के उपयोग की भी सलाह दी। उन्होंने कहा कि यदि 15 जुलाई तक पर्याप्त वर्षा नहीं होती है तो किसान धान के स्थान पर कोदो, कुटकी, ज्वार और रागी जैसी मोटे अनाज की फसलों को प्राथमिकता दें। साथ ही सोयाबीन, अरहर, मूंग एवं उड़द की खेती ब्रॉड बेड-फरो तथा मेड़-नाली पद्धति से करने तथा सोयाबीन+अरहर, मक्का+अरहर, ज्वार+अरहर, मक्का+मूंग/उड़द एवं ज्वार+मूंग/उड़द जैसी अंतरवर्ती फसल प्रणालियां अपनाने की सलाह दी गई। वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी चंद्रभान बागरी ने किसानों से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत फसल बीमा कराने का आग्रह किया। उन्होंने समय पर मेड़बंदी, जल संरक्षण एवं संतुलित उर्वरक प्रबंधन अपनाकर खेतों में नमी बनाए रखने पर जोर दिया। कृषि विकास अधिकारी प्रीति पाटीदार एवं आत्मा परियोजना के बीटीएम तारकेश्वर ने किसानों को भारत मौसम विज्ञान विभाग के मौसम ऐप का उपयोग की जानकारी दी।

(पृष्ठ 12 का शेष)

गेंदा की खेती...

इसलिए रासायनिक खरपतवारनाशी जैसे पेन्डीमिथालिन का 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से पौध रोपने से पहले प्रयोग किया जा सकता है।

पिंचिग : ऐसा देखा गया है कि गेंदे के पौधों की बढ़वार होती रहती है और पौधों के अगल बगल से शाखाएं कम निकलती है लेकिन यदि गेंदे के पौधों के शीर्ष भाग को पौध रोपण से 35 से 40 दिन के बाद जब पौधे 30-40 सेमी लंबे हो जाते हैं, तोड़ दिया जाए तो मुख्य तने की सीधी बढ़वार रुक जाती है और चारों ओर से अनेक शाखाएं निकलने लगती है। शाखाओं की संख्या में वृद्धि के कारण फूल अधिक मात्रा में आते हैं और उपज में भी वृद्धि होती है। पौधों के शीर्ष भाग को तोड़ने की इस क्रिया को पिंचिग कहते हैं।

प्रमुख रोग : गेंदे की फसल पर वैसे तो बीमारियों का प्रकोप बहुत कम होता है लेकिन कभी-कभी कुछ बीमारी पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं। इनमें प्रमुख रोग निम्न हैं।

आर्द्र गलन : इस बीमारी को डेम्पींग ऑफ भी कहते है जो कि राइजोक्टोनिया सोलेनी नामक फफूंद के कारण होता है। यह बीमारी मुख्यत: नर्सरी में पौधों को नुकसान पहुँचाती है। इस बीमारी में पौधों की जड़ों के चारों ओर धब्बे बन जाते हैं जिससे अंकुरण के पहले तथा अंकुरण के बाद पौधे मर जाते हैं। यह बीमारी मुख्यत: वर्षा तथा ठंड वाली फसलों को अधिक नुकसान पहुंचाता है। इस रोग के नियंत्रण के लिए पूर्व में बताई गई विधि से बीज उपचार तथा नर्सरी की क्यारियों का उपचार कर लेना चाहिए। यदि अंकुरण के बाद भी इस बीमारी का प्रकोप होता है तो 0.1 प्रतिशत ब्रैसिकोल या 0.5 प्रतिशत कैप्टान से ड्रेंचिंग कर लें।

झुलसा रोग : इस बीमारी में फूलों की पंखुड़ियों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए पौधों पर मैंक्रोजेब या रीडोमिल नाम फफूंदीनाशक का 2.5 ग्राम/लीटर पानी के हिसाब से 15 दिन के अंतराल पर 3-4 बार छिड़काव करना चाहिए।

पत्ती धब्बा रोग : इस बीमारी पर पत्तियों पर बहुत छोटे भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं जो कि बीमारी बढ़ने के साथ-साथ बड़े हो जाते हैं। नियंत्रण झुलसा रोग के समान किया जा सकता है।

चूर्णिल आसिता : इस रोग के प्रारंभ में पत्तियों पर छोटे-छोटे सफेद धब्बे बन जाते हैं जो बाद में संपूर्ण पौधों पर सफेद पाउडर के रुप में फैल जाते हैं। नियंत्रण के लिए सल्फेक्स का 3 ग्राम/ लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

पमुख कीट : कुछ कीड़े भी गेंदे की फसल को नुकसान पहुंचाते हैं।

रेड स्पाइडर माइट : यह कीड़ा फूल खिलने के समय पौधो पर आक्रमण करता हैं। इसकी रोकथाम के लिए केलथेन की 2 मिली मात्रा को 1 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

रोमिल इल्ली : इस कीट की इल्लीयां पत्तियों व कलियों को खा जाती हैं। नियंत्रण के लिए 2 मिली/ ली. पानी की दर से इन्डोसल्फान या क्विनलफास दवा का छिड़काव करें।

फूलों की तुड़ाई : गेंदे के फूलों की तुड़ाई पूरी तरह से खिलने के बाद ही करनी चाहिए। तोड़ने के लिए सुबह-शाम जब धूप न खिली हो, अच्छा समय होता है। तोड़ने के बाद फूलों को छायादार स्थान पर फैला कर रखना चाहिए। इसके बाद फूलों को आकार के आधार पर श्रेणीकरण कर देना चाहिए और खराब फूलों को अलग कर देना चाहिए। यदि फूलों को बेचने के लिए बाहर ले जाना है तो बांस की टोकनियों पर जिसमें टाट व पूस का स्तर लगा हो, में पैक कर भेजना चाहिए।

उपज : वैसे तो फूलों की उपज किस्म, मिटटी, पौधों की दूरी तथा खाद और उर्वरक पर निर्भर करती है लेकिन अफ्रीकन गेंदा से औसतन 125-150 क्विंटल/हे. और फ्रेंच गेंदा से 80-120 क्विंटल/हे. तक उपज प्राप्त होती है। इस प्रकार से यदि गेंदा की खेती की जाए तो किसान भाई प्रति हेक्टेयर 60000 से 70000 तक शुद्ध लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

(पृष्ठ 9 का शेष)

श्रीविधि द्वारा धान...

- **कीटों और बीमारियों में कमी:** सघनता पद्धति द्वारा उगाये गये धान के मजबूत पौधों पर कीड़ों और बीमारियों का प्रकोप काफी कम पाया है। इस प्रकार कीड़ों और बीमारियों के नियंत्रण के लिए प्रयुक्त रसायनों की कम आवश्यकता होती है और अंतत: फसल उत्पादन की लागत घटती है।
- **बीज, खाद एवं उर्वरक की कम आवश्यकता:** धान सघनता पद्धति में रोपाई के लिए एक स्थान पर एक ही पौध की आवश्यकता होती है जो परंपरागत विधि की तुलना में ज्यादा अंतरण पर लगाया जाता है। अत: इस प्रकार रोपाई के लिए कम पौधों की आवश्यकता होती है जो कम बीज द्वारा उगाये जा सकते हैं।
- **उत्पादन लागत में कमी:** एस.आर.आई. विधि से धान लगाने पर कम बीज कम पानी, कम खाद-उर्वरक और कम रासायनों की आवश्कयता होती है और इससे उत्पादन लागत में कमी लाने में सहायक है।
- **धान के प्रमुख कीट व उनका नियंत्रण:** जिस खेत में पूर्व के धान फसल में फाल्स स्मट एवं तना छेदक कीट गत वर्ष लगा हो उस खेत को गर्मी में जुताई अवश्य कर दें। यदि उपलब्ध हो तो तना छेदक कीट में नियंत्रण हेतु विशेषज्ञों के परामर्श से ट्राइकोकार्ड 15-20 कोर्ड/हेक्टेयर रोपनी के 20-25 दिनों के उपरान्त व्यवहार करें। तत्पश्चात आवश्यकतानुसार खेत में दानेदार कीटनाशी कार्बोफ्यूरान-3 जी (20-25 किलोग्राम/हे.) या फोरेट-10 जी (10 किलोग्राम/हे.), बिचड़ों की रोपाई के 03 सप्ताह के बाद डालें। गंधी कीट के नियंत्रण के लिए 20-25 किलोग्राम नीम की खल्ली या मिथाइल पैराथियान 02 प्रतिशत या क्विनालफास 1.5 प्रतिशत धूल का 10 से 15 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर की दर से सुबह में भुरकाव करें। पत्ती लपेटक या हिस्पा के नियंत्रण के लिए मोनोक्राटोफास 26 ई.सी अथवा क्लोरपायरीफास 25 इ.सी का 02 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। भूरा एवं हरा मधुआ कीट के नियंत्रण के लिए थिमेट 10 प्रतिशत दानेदार दवा 10 किलोग्राम, नीम की खल्ली में मिलाकर प्रति हेक्टर की दर से छीट दें अथवा इमिडाक्लोरप्रिड 17.8 एस.एल. का प्रयोग 01 मि.ली. दवा/03 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- **धान के प्रमुख रोग व उनका उपचार:** धान की भूरी चित्ती एवं फाल्स स्मट के रोग से बचने हेतु बीजोपचार 02 ग्राम थीरम या कैप्टान से प्रति किलोग्राम बीज की दर से करें। भूरी चित्ती रोग की रोकथाम के लिए मैंकोजेब की 2.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। मिथ्या कलिका रोग के लक्षण फसल पर दिखाई दे तो ब्लाइटॉक्स- 50 का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

पत्रावरण झुलसा के लक्षण प्रकट होते ही प्रारंभ में ऐसे पौधे निकाल दें। रोग के फैलते ही बेविस्टीन अथवा प्रॉपिकानाजोल अथवा हिनोसान 01 ग्राम प्रति लीटर की दर से पौधे के निचले भाग पर छिड़काव करें। ब्लाइटोक्स- 50 या फाइटोलान 02.5 ग्राम एवं स्ट्रोप्टो साईक्लीन का 60 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल बनाकर जीवाणु अंगमारी रोग प्रकट होने पर प्रति हेक्टेयर 10 दिन के अंतराल पर दो छिड़काव अवश्य करें। किसी भी बीमारी के आने पर नत्रजन का प्रयोग कम कर देना चाहिए। फाल्स स्मट की रोकथाम के लिए रोग लक्षण प्रकट होते ही टिल्थ 1 ग्राम अथवा कापर आक्सीक्लोराईड 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। खैरा रोग के नियंत्रण के लिये रोपाई के पहले जिंक सल्फेट 20-25 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर की दर से खेत में मिलायें। खड़ी फसल में 1000 ली. पानी में 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट तथा 2.5 कि.ग्रा. बिना बुझा चूना का घोल बानाकर उसमें 2 कि.ग्रा. यूरिया मिलाकर छिड़काव करने से रोग का उपचार होता है तथा फसल की बढ़वार में वृद्धि होती है।

सागर जिले में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री प्रखर जैन

मे. नंदकिशोर कोमलचन्द्र जैन
नया बाजार, सब्जी मंडी, सागर
जिला-सागर (म.प्र.) मो. 7974745335

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

देवास में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

धर्मेन्द्र सिंह राजपूत
ईडब्ल्यूएस-2, चंद्रतारा लिंकसिटी, राजोदा रोड, देवास (म.प्र.)
मो. 8839523598

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स

(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

●औषधीय●वन ●सब्जी●फूल●बीज●स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ●कीटनाशक ●जैविक खाद ● गार्डन टूल ●जैविक उत्पाद ●ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।

वितरक - ●निर्मल सीड्स, जलगांव ●कलश सीड्स, जालाना ●अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ●दिनाकर सीड्स, गुजरात ●सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ●स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ●जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ●स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ●अनु प्रोडक्ट्स लि. ●श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

लघु धान्य फसलों की उन्नत खेती

• **डॉ. गीता सिंह,** वैज्ञानिक
कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डौरी (म.प्र.)
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

लघु धान्य फसलों को उथली भूमि पर भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है और ये शीघ्र परिपक्व हो जाती हैं। लघु धान्य फसलों की खेती खरीफ के मौसम में की जाती है। सांवा, काकुन एवं रागी को मक्का के साथ मिश्रित फसल के रूप में लगाते हैं।

रागी को कोदो के साथ भी मिश्रित फसल के रूप में लेते हैं। ये फसलें गरीब एवं आदिवासी क्षेत्रों में उस समय लगाई जाने वाली खाद्यान्न फसलें है जिस समय पर उनके पास किसी प्रकार अनाज खाने को उपलब्ध नहीं हो पाता है। ये फसलें अगस्त के अंतिम सप्ताह या सितम्बर के प्रारंभ में पककर तैयार हो जाती है जबकि अन्य खाद्यान्न फसलें इस समय पर नहीं पक पाती और बाजार में खाद्यान्नों का मूल्य बढ़ जाने से गरीब उन्हें नहीं खरीद पाते हैं। अत: समय पर 60-80 दिनों में पकने वाली सांवा, कुटकी एवं कंगनी जैसी फसलें महत्वपूर्ण खाद्यान्न के रूप प्राप्त होती है।

भूमि की तैयारी

ये फसलें प्राय: हर प्रकार की भूमि में पैदा की जा सकती है। जिस भूमि में अन्य कोई धान्य फसल उगाना सम्भव नहीं होता वहां भी ये फसलें सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है। उतार-चढ़ाव वाली, कम जल धारण क्षमता वाली, उथली सतह वाली आदि कमजोर किस्म में ये फसलें अधिकर उगाई जा रही है। हल्की भूमि में जिसमें पानी का निकास अच्छा हो इनकी खेती के उपयुक्त होती है। खेत की अच्छी तरह से जुताई कर, खरपतवारों को साफ कर, और कंपोस्ट या वर्मी कंपोस्ट डालकर मिट्टी की उर्वरता बढ़ा सकते हैं। फसल अवशेषों को भूमि में मिलाना मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाता है।

बीज का चुनाव एवं बीज की मात्रा

भूमि की किस्म के अनुसार उन्नत किस्म के बीज का चुनाव करें। हल्की पथरीली व कम उपजाऊ भूमि में जल्दी पकने वाली जातियों का तथा मध्यम गहरी व दोमट भूमि में एवं अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में देर से पकने वाली जातियों की बोनी करें। लघु धान्य फसलों की कतारों में बुवाई के लिये 8-10 किलोग्राम बीज तथा छिटकवां बोनी के लिये 12-15 किलोग्राम बीज प्रति हे. पर्याप्त होता है। लघु धान्य फसलों को अधिकतर छिटकवां विधि से बोया जाता है।

बोने का समय

वर्षा आरंभ होने के तुरंत बाद लघु धान्य फसलों की बोनी कर दें। शीघ्र बोनी करने से उपज अच्छी प्राप्त होती है एवं रोग, कीट का प्रभाव कम होता है। कोदों में सूखी बोनी मानसून आने के दस दिन पूर्व करने पर उपज में अन्य विधियों से अधिक उपज प्राप्त होती है। जुलाई के अंत में बोनी करने से तना मक्खी कीट का प्रकोप बढ़ता है।

बीजोपचार

बोने से पूर्व बीज को मेन्कोजेब या थायरम दवा 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीजोपचार करें। ऐसा करने से बीज जनित रोगों से फसल की सुरक्षा होती है।

बोने का तरीका

कतारों में बोनी करने कतार के कतार की दूरी 20-25 सेमी तथा पौधों से पौधों की दूरी 7 सेमी उपयुक्त पाई गई है। इसकी बोनी 2-3 सेमी गहराई पर की जाए। कोदो में 6-8 लाख एवं कुटकी में 8-9 लाख पौधे प्रति हेक्टेयर हो।

खाद एवं उर्वरक का उपयोग

कुटकी में 20 नत्रजन, 20 स्फुर प्रति हेक्टेयर तथा कोदो एवं रागी के लिए 40 किलो नत्रजन व 20 किलो स्फुर प्रति हेक्टेयर के उपयोग करने से वृद्धि होती है। नत्रजन की आधी मात्रा व स्फुर की पूरी मात्रा बुआई के समय एवं नत्रजन के शेष आधी मात्रा बुआई के 3 से 5 सप्ताह के अन्दर निंदाई के बाद दें।

निंदाई-गुड़ाई

बुआई के 20-30 दिन के अन्दर एक बार हाथ से निंदाई करें। तथा जहां पौधे न ऊगे हो वहां पर अधिक घने पौधों को ऊखाड़ कर पौधों की संख्या उपयुक्त करें। यह कार्य पानी गिरते समय सर्वोत्तम होता है।

फसल सुरक्षा- (कीट)

तना मक्खी: कोदो-कुटकी में इस कीट की छोटे आकार की मटमैली सफेद मेगट फसल की पौध अवस्था पर तने के अन्दर के तंतुओं को खाते हैं। जिससे कारण डेड हार्ट बन जाता है और इसमें बालें नहीं आती।

रोकथाम: इमिडाक्लोप्रिड 125 मिली या डायमिथोयेट 30 ईसी 750 मिली दवा 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर छिड़काव करें और छिड़काव के पूर्व डेडहार्ट खीचकर इकटठा कर जमीन में गाड़ दें।

कम्बल कीट (हेयर केटर पिलर): काले रंग की रोयेदार इल्ली है जो पत्तियों को खाकर नुकसान पहुंचाती है।

रोकथाम: खेत में पक्षियों के बैठने हेतु टी आकार की खूटियां लगभग 3 फिट ऊंचाई की 25 खूटी प्रति हेक्टेयर की दर से लगायें। डायमिथोयेट 30 ईसी 1200 मिली दवा 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर छिड़कें।

सांवा, रागी बालियों की सूंडी: भूरे रंग की रोएदार इल्लियां बालियों के दानों को खाती हैं।

रोकथाम: डायमिथोयेट 30 ईसी 1200 मिली दवा 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर छिड़काव करें ।

कुटकी की गाल मिज: इस कीट मेगट इल्ली, भरते हुए दानों को नुकसान पहुंचाती है जिससे दाना खराब हो जाता है।

रोकथाम: बालियों की अवस्था पर क्लोरोपाइरीफास 20 ईसी 1000 मिली 500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हे. छिड़कें।

रोग

कोदो-कुटकी एवं रागी कंडवा रोग: बालियां काले रंग के पुन्ज में बदल जाती है।

रोकथाम: वीटावैक्स 2 ग्रा./किलो ग्राम बीज दर से उपचारित करें। रोगग्रस्त बाली जला दें।

कोदो का धारीदार रोग: पत्तियों पर पीली धारियां शिराओं के समानान्तर बनती हैं। अधिक प्रकोप होने पर पूरी पत्ती भूरी होकर सूखकर गिर जाती है।

रोकथाम: बीजोपचार करें तथा लक्षण दिखते ही डायथेन जेड- 78 (0.35 प्रतिशत) 15 दिन के अन्तर में छिड़कें।

कटाई गहाई एवं भण्डारण

फसल पकने पर कोदो-कुटकी को जमीन की सतह के ऊपर कटाई करें खलिहान सुखाकर बैलों से गहाई करें उड़ावनी करके दाना अलग करें तथा दानों को धूप में सुखाकर भण्डारण करें।

कोदों का भण्डारण कई वर्षों तक किया जा सकता है, क्योंकि इनके दानों में कीटों का प्रकोप नहीं होता है।

भण्डारण करते समय सावधानियां

भण्डार गृह के पास पानी जमा नहीं हो। भण्डार गृह की फर्श जमीन से कम से कम दो फिट ऊंची हो। कोठी, बण्डा आदि में दरार हो तो उन्हें बंद कर दें। इनकी दरार में कीड़े हों तो उन्हें चूना से पुताई कर नष्ट करें।

उन्नत किस्में

कोदो: जवाहर कोदो 48 (डिण्डौरी-48), जवाहर कोदो 439, जवाहर कोदो 41, जवाहर कोदो 62, जवाहर कोदो 76, जीपीयूके 3

कुटकी: जवाहर कुटकी 1 (डिण्डौरी-1), जवाहर कुटकी 8, सी.ओ. 2, पी.आर.सी. 3

रागी: एच.आर. 374, आरएयू 8, जेएनआर 852, जेएनआर 1008

लघु धान्य फसलों का महत्व: ये फसलें कम समय में परिपक्व हो जाती हैं और अच्छी उपज देती हैं। ये सूखा-प्रतिरोधी होती हैं और विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती हैं। ये गरीब और आदिवासी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण खाद्य सुरक्षा प्रदान करती हैं। ये विभिन्न पोषक तत्वों का अच्छा स्रोत हैं।

(पृष्ठ 10 का शेष)

जलभराव, पोषक तत्वों...

इसी प्रकार लगातार नमी रहने से पत्ती झुलसा, जड़ गलन, तना गलन तथा अन्य फफूंदजनित रोगों का प्रकोप भी बढ़ जाता है। इसलिए खेत का नियमित निरीक्षण करें और आवश्यकता पड़ने पर कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार अनुशंसित खरपतवारनाशी या फफूंदनाशी का ही प्रयोग करें। रसायनों का प्रयोग हमेशा अनुशंसित मात्रा और उचित समय पर ही करना चाहिए।

संतुलित पोषण से बढ़ती है फसल की सहनशीलता

जलभराव या लगातार वर्षा के बाद जिंक, आयरन तथा सल्फर जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी भी दिखाई दे सकती है। ऐसे में पत्तियां पीली पड़ना, पौधों की धीमी वृद्धि या नई पत्तियों का हल्के रंग का होना सामान्य लक्षण हैं। यदि आवश्यकता हो तो कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार सूक्ष्म पोषक तत्वों का पर्णीय छिड़काव किया जा सकता है। साथ ही जैविक खाद, गोबर की सड़ी खाद और कम्पोस्ट के नियमित उपयोग से मिट्टी की जलधारण क्षमता और पोषक तत्वों को संचित रखने की क्षमता भी बढ़ती है।

मौसम आधारित कृषि अपनाएं

आज के समय में खेती केवल अनुभव के आधार पर नहीं, बल्कि मौसम की जानकारी के आधार पर भी की जानी चाहिए। किसान यदि मौसम विभाग के पूर्वानुमान पर ध्यान दें तो उर्वरक, सिंचाईए खरपतवार नियंत्रण तथा पौध संरक्षण संबंधी कार्यों की बेहतर योजना बना सकते हैं। भारी वर्षा की संभावना होने पर उर्वरकों या कीटनाशकों का प्रयोग टालना चाहिए ताकि आर्थिक नुकसान से बचा जा सके।

किसान इन बातों का रखें विशेष ध्यान

- खेत में अतिरिक्त पानी 24-48 घंटे से अधिक न रुकने दें।
- मेड़ों और निकास नालियों की नियमित सफाई करें।
- वर्षा से पहले जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग विभाजित मात्रा में करें।
- वर्षा के बाद खेत का निरीक्षण कर आवश्यक सुधारात्मक उपाय तुरंत अपनाएं।
- समय पर खरपतवार नियंत्रण करें।
- रोग एवं कीटों के प्रारंभिक लक्षणों पर तुरंत ध्यान दें।
- मिट्टी परीक्षण के आधार पर संतुलित उर्वरक प्रबंधन अपनाएँ।
- मौसम पूर्वानुमान के अनुसार कृषि कार्यों की योजना बनाएं।
- कृषि वैज्ञानिकों द्वारा अनुशंसित तकनीकों को प्राथमिकता दें।
- **निष्कर्ष:** बदलती जलवायु और अनिश्चित मानसून के दौर में केवल अच्छी वर्षा की प्रतीक्षा करना पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि उपलब्ध वर्षा जल का वैज्ञानिक ढंग से प्रबंधन किया जाए और खेत में जलभराव, पोषक तत्वों की हानि तथा मिट्टी कटाव जैसी समस्याओं को समय रहते नियंत्रित किया जाए। यदि किसान वर्षा के दौरान नियमित रूप से खेत का निरीक्षण करें, उचित जल निकासी बनाए रखें, संतुलित पोषण अपनाएं और मौसम आधारित कृषि प्रबंधन करें, तो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी फसल को सुरक्षित रखा जा सकता है। वैज्ञानिक प्रबंधन से न केवल उत्पादन और गुणवत्ता में वृद्धि होगी, बल्कि खेती की लागत घटेगी, जोखिम कम होगा और किसानों की आय में भी सकारात्मक सुधार देखने को मिलेगा।

किसानों की सेवा में समर्पित कुशवाहा बीज भंडार

खटखरी। कृषि आदान विक्रेता कुशवाहा बीज भंडार खटखरी जिला मऊगंज के प्रो. सुरेश कुशवाहा विगत 9 वर्षों से

लगातार किसानों की सेवा में समर्पित हैं। श्री कुशवाहा द्वारा उच्च गुणवत्तायुक्त समस्त प्रकार का बीज, कीटनाशक दवाईयां, स्प्रेपंप एवं अन्य उत्पादों का विक्रय किया जाता है। श्री कुशवाहा ने बताया कि इस संस्था का 1500 से अधिक किसानों से सीधा संपर्क है जो समस्त प्रकार के बीज गुणवत्तायुक्त बीज एवं पेस्टीसाइड्स क्रय करते हैं। ये सभी किसान इस संस्था के नियमित ग्राहक बन जाते हैं। सरल स्वभाव के सुरेश कुशवाहा कंपनियों के अधिकारियों के मार्गदर्शन पर किसानों को उचित सलाह के साथ साथ फसलों की बीमारियों से संबंधित जानकारियां उपलब्ध कराने में कोई कसर नहीं छोड़ते। श्री कुशवाहा हमेशा किसानों को उचित सलाह देते हैं कि ज्यादा से ज्यादा जैविक खाद का उपयोग करें और उच्च गुणवत्ता युक्त बीज का उपयोग करें ताकि फसल में लगने वाली बीमारियों से निजात मिल सके। श्री कुशवाहा ने बताया कि संस्था संचालन में हमारे बेटे का सहयोग मिलने से काफी आगे बढ़ रहे हैं। यदि किसी उत्पाद में गड़बड़ी होती है तो संबंधित कंपनी एवं प्रदायक तक पहुंचाते हैं ताकि कृषि उत्पादों से किसान संतुष्ट रहें। हमेशा किसानों को उचित सलाह एवं मार्गदर्शन देना पहली प्राथमिकता है। कुशवाहा बीज भंडार के संचालक ने बताया कि उनका उद्देश्य किसानों को विश्वासनीय उत्पादों का विक्रय करना है। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि प्रतिष्ठित कंपनियों के उत्पादों का उपयोग करें ताकि उत्पादन गुणवत्तापूर्ण मिल सके। यह संस्था किसानों के विश्वास की बदौलत आज जिलेभर में तेजी से लोकप्रिय हो रही है।

(पृष्ठ 8 का शेष)

सोयाबीन का उत्पादन...

- **संतुलित पोषण प्रबंधन:** सोयाबीन के एक हेक्टर क्षेत्र की फसल के लिए अनुशंसित 20:60:20:20 कि.ग्रा. नत्रजन:स्फुर:पोटाश: गंधक की आवश्यक पूर्ति हेतु बोवनी के समय विभिन्न उर्वरकों का प्रयोग करें।
- **बीजोपचार:** बोवनी से पहले सोयाबीन के बीज को थाइरम एवं कार्बेन्डाजिम (2:1) 3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से अथवा मिश्रित उत्पाद कार्बोक्सिन 37.5 प्रतिशत+थाइरम 37.5 प्रतिशत (विटावेक्स पावर) 2-3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। इनके स्थान पर बीज उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा विरिडी (8-10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज) का भी उपयोग किया जा सकता है। तत्पश्चात् जैविक खाद (राइजोबियम एवं पीएसबी कल्चर 5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से) उपचारित करें एवं छाया में सुखाकर तुरन्त बोवनी हेतु उपयोग करना चाहिए।
- **अन्तरवर्ती फसल:** अन्तरवर्ती फसल प्रणाली में भी सोयाबीन की काश्त अधिक लाभकारी है। असिंचित क्षेत्रों में सोयाबीन, अरहर (जवाहर -3, आईसीपीएल- 87119 एवं 88039) की खेती करें तथा सिंचित क्षेत्रों में सोयाबीन के साथ मक्का/ज्वार/कपास आदि उपयुक्त फसलों की काश्त करें। इसके लिये 4:2 के अनुपात में सोयाबीन व अंतरवर्ती फसल को 30 सें.मी. की कतारों पर बोवनी करें। फ्ल बागों के बीच की खाली जगह में भी सोयाबीन की खेती की जा सकती है।
- **अन्त: शस्यकर्षण एवं खरपतवार प्रबंधन:** सोयाबीन की फसल का बोवनी से 45 दिनों तक ही खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। यह कार्य हाथ से निंदाई/अन्त: सस्यकर्षण (डोरा/कुलपा)/ खरपरवारनाशकों के उपयोग से सभव हैं। अत: यह सलाह दी जाती है कि कृषकों की सुविधानुसार उपरोक्त विधियों में से किसी एक का चुनाव कर खरपरवार प्रबंधन करें। 25 से अधिक दिन की फसल में डोरा/ कुलपा चलाना फसल के लिए नुकसानदेह हो सकता है।
- **जल प्रबंधन:** पौध फूल एव दाना भरने की अवस्थाएं मृदा नमी के लिए क्रांतिक अवस्थाएं होने के कारण सूखे की स्थिति में इन अवस्थाओं में सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। बीबीएफ/फर्ब सीड ड्रिल द्वारा बोवनी करने पर सूखा एवं अधिक वर्षा से होने वाली हानि को कम किया जा सकता है।
- **कटाई एवं गहाई:** फलियों का हरा रंग बदलने या पूर्णतया समाप्त होने पर यह मान ले कि फलियां परिपक्व हो चुकी हैं। इस अवस्था में सोयाबीन की कटाई करनी चाहिए। कटी हुई फसल को 2-3 दिन धूप मे सुखाकर थ्रेशर से धीमी गति (300-400 आर.पी.एम.) पर गहाई करनी चाहिए एवं इस बात की सावधानी रखें कि गहाई के समय बीज के छिलके को क्षति न हो।
- **भण्डारण:** गहाई के बाद बीज का धूप में अच्छें से सुखाकर भण्डारण करना चाहिए। भण्डार गृह ठंडा, नमी रहित व हवादार होना चाहिए। यहां यह भी सावधानी रखें कि 4 से अधिक बोरियों को एक के ऊपर एक न रखें। बीज की बोरियों का ऊँचाई से नहीं पटकना चाहिए। इससे बीज की अंकुरण क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

मध्यप्रदेश की जिलेवार वर्षा

01 जून से 03 जुलाई 2026 तक (वर्षा मिमी में)

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
आगर-मालवा	174.8	127.3	37
अलीराजपुर	19.7	145	-86
अशोकनगर	169.8	133.6	27
बड़वानी	99.7	128.9	-23
बैतूल	208.4	180.1	16
भिंड	38.5	78.6	-51
भोपाल	233.8	156.9	49
बुरहानपुर	191.1	158.5	21
दतिया	41	101.9	-60
देवास	306.7	152.1	102
धार	118.2	142	-17
गुना	175.3	145.2	21
ग्वालियर	79.8	88.6	-10
हरदा	184.1	153.1	20
इंदौर	265.1	141.7	87
झाबुआ	57.9	137.8	-58
खंडवा	169	148.5	14
खरगोन	157.9	143.2	10
मन्दसौर	145.9	120.4	21
मुरैना	67.1	80.3	-16
नर्मदापुरम	135.2	194.1	-30
नीमच	183.5	121	52
रायसेन	159.4	178.5	-1
राजगढ़	171.8	130.3	32
रतलाम	114.2	128.4	-11
सीहोर	231.9	162	43
शाजापुर	164.9	130.2	27
श्योपुर	100.9	94	7
शिवपुरी	90.7	120.6	-25

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
उज्जैन	155.1	139.8	11
विदिशा	157	170	-8
पश्चिमी म.प्र.	151.5	140	8
अनूपपुर	99.6	180	-45
बालाघाट	167.9	216.4	-22
छतरपुर	61.9	137	-55
छिंदवाड़ा	156.8	189.3	-17
दमोह	127.5	180.8	-29
डिंडोरी	141.1	214.5	-34
जबलपुर	96.8	185.8	-48
कटनी	88	159	-45
मंडला	113.7	206.1	-45
नरसिंहपुर	84.6	165	-49
निवाड़ी	101.3	109.3	-7
पन्ना	89.9	167.9	-46
रीवा	47.3	154.3	-69
सागर	138.3	192	-28
सतना	115	163.2	-30
सिवनी	205.2	199.1	3
शहडोल	114.7	156.2	-27
सीधी	77.1	168.8	-54
सिंगरौली	87	189.3	-54
टीकमगढ़	35.5	148.6	-76
उमरिया	113.6	179.9	-37
मैहर	54.8	156.9	-65
मऊगंज	72.5	155.5	-53
पांढुर्णा	267.8	163.1	64
पूर्वी म.प्र.	115.2	177.1	-35
म.प्र. योग	135.3	156.1	-13

(स्रोत : मौसम विभाग)

49 लाख हेक्टेयर में खरीफ फसलों की बुवाई

खरीफ फसल बुवाई की धीमी शुरुआत

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। मानसून की अनिश्चितता के कारण इस साल खरीफ फसलों की बुवाई धीमी गति से शुरू हुई है। प्रदेश में सामान्यत: 15 जून के आसपास मानसून का आमगन होता है लेकिन इस साल 25 जून के बाद मानसून आने से खरीफ फसलों की बुवाई देर से शुरू हुई है। प्रदेश के 90 प्रतिशत से अधिक जिलों में मानसूनी बौछारें पड़ना शुरू हो गई है।

कृषि संचालनालय, भोपाल से प्राप्त जानकारी अनुसार अभी तक 48.70 लाख हेक्टेयर में खरीफ फसलों की बुवाई की गई है। गत वर्ष समान अवधि में 50.41 लाख हेक्टेयर में बुवाई की गई थी। चालू खरीफ सीजन में 150.45 लाख हेक्टेयर में खरीफ बुवाई प्रस्तावित है। सोयाबीन की बुवाई 25.96 लाख हेक्टेयर में पूरी हो चुकी है। पिछले साल अब तक 29.74 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन बोया गया था। मक्का की बुवाई 11.88 लाख हेक्टेयर में हुई है। गत वर्ष समान अवधि में यह बुवाई 10.46 लाख हेक्टेयर में हुई थी। कपास की बुवाई पिछले साल से थोड़ा कम 4.19 लाख हेक्टेयर में हुई है। धान की बुवाई 4.37 लाख हेक्टेयर में की गई है। जो कि समान अवधि में पिछले साल की बुवाई 1.85 लाख हेक्टेयर से अधिक है।

खरीफ की अन्य फसलों में ज्वार 6 हजार हेक्टेयर, बाजरा 58 हजार हेक्टेयर, अरहर 52 हजार हेक्टेयर, उड़द 87 हजार हेक्टेयर, मूंग 9 हजार हेक्टेयर, मूंगफली 63 हजार हेक्टेयर एवं तिल 4 हजार हेक्टेयर में बोयी गई है। खरीफ फसल बुवाई पिछले साल की अपेक्षा 34 प्रतिशत एवं लक्ष्य का 33 प्रतिशत की गई है।

प्रमुख खरीफ फसलों की बुवाई

फसल	लक्ष्य 2026	गत वर्ष की बोनी	बोनी 2026
धान	39.63	1.85	4.37
ज्वार	0.85	0.22	0.06
मक्का	27.53	10.46	11.88
बाजरा	3.81	0.58	0.01
कोदो	1.57	0.02	0.04
तुअर	2.17	0.44	0.52
उड़द	5.31	0.70	0.87
मूंग	0.79	0.12	0.09
सोयाबीन	54.09	29.74	25.96
मूंगफली	6.17	1.74	0.63
तिल	2.44	0.27	0.04
रामतिल	0.36	0.00	0.05
कपास	5.72	4.26	4.19
कुल योग	150.45	50.41	48.70

(क्षेत्र- लाख हेक्टेयर में)

सीएम ने धान प्रदर्शनी का किया अवलोकन

सिवनी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्यातिथ्य में सिवनी जिले में धान महोत्सव एवं कोदो कुटकी बोनस वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान मुख्यमंत्री द्वारा कृषक के खेत में धान की रोपाई कर धान महोत्सव की शुरुआत की गई। किसानों की खुशहाली हेतु एवं फसलों की अच्छी पैदावार के माध्यम से किसानों को समृद्धशाली बनाने हेतु धान रोपाई के शुभारंभ का उत्सव मनाया गया।

धान महोत्सव कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. शेखर सिंह बघेल, वैज्ञानिक डॉ. निखिल सिंह, डॉ. राजेंद्र सिंह ठाकुर, इंजीनियर कुमार सोनी एवं डॉ. जी.के. राणा आदि की उपस्थिति में केंद्र का आधुनिक खेती को प्रदर्शनी के रूप में बैनर पोस्टर एवं जीवंत उत्पाद प्राकृतिक खेती, जैविक खेती, धान की नर्सरी ,धान की नवीनतम किस्म अजोला, केंचुआ खाद, मूंगना, बेगानी सेम, धान के जीआई टैग हेतु, जीराशंकर किस्म का प्रदर्शन किया गया। बालाघाट कृषि महाविद्यालय से धान के विशेषज्ञ वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. उत्तम बिसेन एवं पवन अमूले द्वारा धान की महत्वपूर्ण किस्म का प्रदर्शन एवं मध्य प्रदेश की प्रथम जीआई टैग फसल चिन्नौर का प्रदर्शन किया गया। इस दौरान केंद्र प्रमुख डॉ. शेखर सिंह बघेल द्वारा मुख्यमंत्री डॉ. यादव को जीरा शंकर धान किस्म की जानकारी एवं धान की अन्य किस्मो की तकनीकी जानकारी के साथ ही प्राकृतिक खेती, डीएसआर तकनीक के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी स्टाल में प्रदान की गई।

प्रमुख सचिव कृषि निशांत वरवड़े ने भी स्टाल का भ्रमण किया एवं धान एवं अन्य फसलों में जीआई टैग हेतु प्राप्त करने के बारे मों विस्तार से बात। सिवनी जिले की विधायक दिनेश राय मुनमुन, बालाघाट सिवनी सांसद श्रीमती पारधी, भूतपूर्व सांसद डॉ. ढाल सिंह बिसेन, किसान मोर्चा अध्यक्ष प्रदीप राय, जिला सिवनी की भाजपा अध्यक्ष मीना बिसेन, मंडला सिवनी सांसद फग्गन सिंह कुलस्ते एवं अन्य प्रतिनिधि जिले की कलेक्टर नेहा मीना, डीडीए सुधीर धुर्वे, संयुक्त संचालक कृषि के.एस. नेताम, अन्य विभागों के अधिकारियों द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र के स्टाल में भ्रमण कर जानकारी प्राप्त की।

संभावित अल्प वर्षा से निपटने के लिए सभी विभाग करें समन्वित तैयारी: डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने संभावित अल्प वर्षा की स्थिति से निपटने दिये निर्देश

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि संभावित अल्प वर्षा की स्थिति को चुनौती नहीं, बल्कि बेहतर योजना, वैज्ञानिक खेती और समयबद्ध तैयारी के अवसर के रूप में लिया जाए। सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए किसानों को समय पर आवश्यक मार्गदर्शन उपलब्ध कराएं, जिससे प्रदेश में कृषि उत्पादन और किसानों की आय पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंत्रालय में इस वर्ष प्रदेश में संभावित अल्प वर्षा की स्थिति के मद्देनजर किसान कल्याण एवं कृषि विकास, जल संसाधन, उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन, सहकारिता, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी सहित अन्य संबंधित विभागों की अब तक की पूर्व तैयारियों की गहन समीक्षा की।

डॉ. यादव ने कहा कि हमारी प्राथमिकता है कि प्रदेश का प्रत्येक किसान मौसम की चुनौतियों का सामना वैज्ञानिक सोच और उचित तैयारी के साथ करे। समय पर सही निर्णय और विभागों के प्रभावी समन्वय से हम संभावित अल्प वर्षा के प्रभाव को काफी हद तक कम कर सकते हैं। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि किसानों को कम पानी और कम अवधि में तैयार होने वाली फसलों की खेती के लिए व्यापक स्तर पर जागरूक किया जाए। उन्होंने ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, तुअर तथा कोदो-कुटकी जैसी मोटे अनाज एवं दलहनी फसलों को अपनाने पर विशेष बल देते हुए कहा कि ये फसलें कम पानी में भी बेहतर उत्पादन देने के साथ किसानों के लिए अधिक लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं।

डॉ. यादव ने कहा कि किसानों को जल्दबाजी में बुआई नहीं करने के लिए भी प्रेरित किया जाए। खेतों में पर्याप्त नमी आने के बाद ही बुआई की जाए तथा नमी संरक्षण के उपाय अपनाए जाएं। साथ ही कम समय में अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों और आधुनिक कृषि तकनीकों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार संभावित अल्प वर्षा की स्थिति पर सतत निगरानी रखे हुए है। सभी संबंधित विभाग पूर्व नियोजित कार्य योजना के अनुसार समन्वित रूप से कार्य करें और किसानों को हर संभव तकनीकी एवं प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराएं।

इफको प्रशिक्षण में नैनो उर्वरक व आधुनिक तकनीकों पर जोर

श्रीनगर। इफको मध्य प्रदेश द्वारा 18 से 21 जून 2026 तक श्रीनगर में चार दिवसीय अन्त:सेवा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश क्षेत्र के 48 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागिता करते हुए प्रबंधन, विपणन, तकनीकी नवाचार, नैनो उर्वरक, जैव उर्वरक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), ड्रोन तकनीक तथा आधुनिक कृषि सेवाओं से जुड़े विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इफको के विपणन निदेशक डॉ. योगेन्द्र कुमार ने कहा कि नैनो उर्वरक वैज्ञानिक अनुसंधान एवं नवाचार का उत्कृष्ट परिणाम हैं, जो भविष्य की टिकाऊ कृषि व्यवस्था की आधारशिला बनेंगे। उन्होंने एनपीके कंसोर्टिया, पीएसबी कल्चर एवं बायोडीकंपोजर जैसे जैव उर्वरकों के व्यापक उपयोग पर बल देते हुए कहा कि इनके नियमित प्रयोग से मृदा में ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा बढ़ेगी, मिट्टी की उर्वराशक्ति में सुधार होगा तथा दीर्घकालीन कृषि उत्पादकता को बढ़ावा मिलेगा।

मुख्य प्रबंधक श्री अभिषेक ने पीओएस प्रणाली के माध्यम से उर्वरकों की बिक्री बढ़ाने, नैनो उत्पादों के प्रभावी लिक्विडेशन, अधिकाधिक सेंटर विकसित करने तथा विपणन नेटवर्क को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। जॉइंट जनरल मैनेजर (कमर्शियल) श्री ओमप्रकाश कुमार ने वीएलटीएस प्रणाली के क्रियान्वयन की जानकारी देते हुए बताया कि मध्य प्रदेश क्षेत्र में इफको ने इस प्रणाली को सबसे पहले लागू किया है, जिससे परिवहन व्यवस्था, पारदर्शिता एवं कार्यकुशलता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। इफको ई-बाजार लिमिटेड के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर श्री आर.के.एस. राठौर ने ई-बाजार केंद्रों की प्रगति की समीक्षा करते हुए उत्पादों की बिक्री बढ़ाने, किसानों की समस्याओं के त्वरित समाधान तथा क्षेत्रीय अधिकारियों के बेहतर समन्वय पर बल दिया। वहीं उप महाप्रबंधक श्री रजनीश पाण्डेय ने स्थानीय स्तर पर मजबूत लॉजिस्टिक व्यवस्था विकसित कर उत्पादों के समयबद्ध वितरण एवं लिक्विडेशन सुनिश्चित करने की आवश्यकता बताई। मुख्य प्रबंधक श्री ऋषभ रिक्की ने कृषि क्षेत्र में ड्रोन तकनीक के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डालते हुए उपलब्ध ड्रोन संसाधनों के अधिकतम उपयोग तथा किसानों तक ड्रोन आधारित सेवाओं के विस्तार पर जोर दिया।

प्रशिक्षण के दौरान सभी प्रतिभागियों ने पावरपॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से अपने-अपने जिलों में खरीफ एवं रबी सीजन की प्रमुख फसलों, कृषि परिदृश्य, विपणन गतिविधियों तथा विभिन्न उत्पादों की संभावित बिक्री रणनीतियों को प्रस्तुत किया। इन प्रस्तुतियों की समीक्षा करते हुए डॉ. योगेन्द्र कुमार ने आवश्यक सुझाव दिए तथा आगामी सीजन के लिए लक्ष्य निर्धारित किए।

कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए राज्य विपणन प्रबंधक (म.प्र.) डॉ. दिनेश कुमार सोलंकी ने विश्वास दिलाया कि प्रशिक्षण में प्राप्त सभी दिशा-निर्देशों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि आगामी खरीफ एवं रबी सीजन में सभी अधिकारी एवं कर्मचारी नैनो उत्पादों सहित इफको के विभिन्न उर्वरकों एवं कृषि उत्पादों के प्रचार-प्रसार, बिक्री वृद्धि तथा किसानों को बेहतर तकनीकी सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेंगे। प्रशिक्षण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित कार्यप्रणाली, आधुनिक डिजिटल तकनीकों, नैनो एवं जैविक उत्पादों के व्यापक प्रचार-प्रसार तथा टिकाऊ कृषि प्रणाली को बढ़ावा देने पर भी विशेष चर्चा की गई। अधिकारियों एवं कर्मचारियों से किसानों की आय बढ़ाने, मृदा स्वास्थ्य संरक्षण तथा आधुनिक कृषि तकनीकों के अधिकाधिक प्रसार के लिए समन्वित प्रयास करने का आह्वान किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. ओमशरण तिवारी ने किया। सभी अतिथियों, अधिकारियों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया तथा संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समर्पित भाव से कार्य करने का संकल्प लिया गया।

(पृष्ठ 11 का शेष) लाभदायक अरहर...

- **प्रबंधन:** डाईमिथोएट या इमिडाक्लोरप्रिड 17.8 एस.एल. को 3 मि.ली./10 ली.पानी या फेनवेलरेट 20 ई.सी. 1 मि.ली./लीटर पानी का छिड़काव करना चाहिए।

एन.पी.बी. (विषाणु) 250 एल.ई. फली छेदक गिडार समतुल्य प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करना चाहिए।

- **पत्ती लपेटक (लीफ रोलर):** इस कीट की सूंडियां को लपेटकर सफेद जाला बनाकर उसी में छिपकर पत्तियों को खाती है। ये फूल की कलियों एवं कोमल फलियों को भी हानि पहुंचाती है।
- **प्रबंधन:** आई.पी.एम. प्रबन्धन के अन्दर फुनगी की लिपटी हुई पत्तियों/फलियों को तोड़कर जला देना चाहिए। अधिक प्रकोप की दशा डायमिथोएट 3 मि.ली./10 ली.पानी का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

अरहर के प्रमुख रोग एवं उनका प्रबंधन

- **उकठा रोग:** इस रोग से अरहर की फसल को सर्वाधिक क्षति होती है। यह रोग फ्यूजेरियम उडम नामक कवक द्वारा फैलता है। जब पौधे 30 से 45 दिन के हो जाते हैं तब से वे इस के चपेट में आने लगते हैं। इसमें पत्तियां पीली पड़कर झुक जाती हैं और पूरा पौधा सूख जाता है। जाड़ों में कवक के प्रभाव से पौधों के अन्दर खाद्य पदार्थ का संचार रूक जाता है। इसमें जड़ें सड़कर गहरे रंग की हो जाती हैं। जड़ से लेकर तनों की कुछ ऊंचाई तक छाल को हटाने से काले रंग की धारियां दिखाई पड़ती हैं।
- **प्रबंधन:** प्रभावित खेत की गर्मी में गहरी जुताई करके पूर्व फसल की दबी हुई जड़ों को निकालकर जला देना चाहिए। प्रभावित खेत में अगले 5-6 वर्ष तक अरहर की फसल नहीं लेना चाहिए। हरी खाद के प्रयोग तथा ज्वार/तिल के साथ मिलाकर खेती करने पर रोग का प्रकोप कम हो जाता है। रोग रोधी किस्मों की बुआई करनी चाहिए।
- **झुलसा रोग:** यह फफूंद जनित रोग है। इस रोग के कारण पत्तियों एवं फूलों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। जिससे वे सूखने लगते हैं। इसके साथ फूलों पर भी गहरे भूरे धब्बे बनकर उसे सूखा देते हैं जिससे फलियां बनती ही नहीं, यदि बनती भी हैं तो वे सूख जाती हैं।
- **प्रबन्धन:** इसके प्रबन्धन हेतु मैंकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। बीजों की कार्बेन्डाजिम की 2.5 ग्राम मात्रा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करके बोना चाहिए। भूमि में 5 कि.ग्रा प्रति हेक्टेयर ट्राइकोडर्मा बिरिडी नामक जैव फफूंद को मिलाना चाहिए।
- **अरहर का बांझ चितेरी रोग:** इस रोग का प्रमुख लक्षण यह है कि पौधा बौना और पत्तियों का रंग व आकार सामान्य से काफी छोटा एवं पतला हो जाता है एवं उन पर अनियमित आकार की हल्की एवं गहरी चित्तियां पड़ जाती हैं। रोग ग्रसित पौधे लम्बाई में छोटे रह जाते हैं। यह रोग एक विषाणु द्वारा होता है। जिसे अरहर बांध्यता मोजेक विषाणु का नाम दिया गया है। इसका संचरण खेतों में अति सूक्ष्म कीट (इरियोफिड माइट) द्वारा होता है।
- **प्रबंधन:** खेतों में उचित सफाई रखनी चाहिए। खड़ी फसल में जैसे ही बाँझ चितैरी रोग ग्रसित पौधा दिखाई दें, उसे उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। रोगरोधी किस्मों का प्रयोग करें। फसल की प्रारंभिक अवस्था में रोग दिखाई देने पर कीटनाशी जैसे- मेटासिस्टास्क 1 मि.ली. या डाईमेथोऐट 0.5 मि.ली./ लीटर पानी में घोल बनाकर 10 दिनों के अंतराल पर दो या तीन छिड़काव करने से रोग का फैलाव रोका जा सकता है।

इफको सहकारिता प्रतिज्ञा कार्यक्रम आयोजित

भोपाल। भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय के निर्देशानुसार सहकार से समृद्धि के पांच स्वर्णिम वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में इफको राज्य कार्यालय भोपाल में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. दिनेश कुमार सोलंकी, म.प्र. राज्य विपणन प्रबंधक ने की। इस दौरान उन्होंने सहकारिता की भावना को समाज एवं कृषि क्षेत्र के समग्र विकास का आधार बताते हुए कहा कि सहकारिता आंदोलन किसानों की आर्थिक समृद्धि, आत्मनिर्भरता तथा ग्रामीण विकास का सशक्त माध्यम है। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से सहकारिता के सिद्धांतों एवं मूल्यों को अपने कार्यों में आत्मसात करते हुए किसानों की सेवा के लिए सतत् समर्पित रहने का आह्वान किया।

इस अवसर पर राज्य कार्यालय, भोपाल के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सहकारिता प्रतिज्ञा लेकर सहकारिता आंदोलन को सुदृढ़ बनाने तथा किसानों के हित में पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ कार्य करने का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र निर्माण एवं किसान कल्याण में सहकारिता की भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाने के संकल्प के साथ हुआ। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

स्वराज 855 FE अब प्रो-टेक की स्मार्ट टेक्नालॉजी के साथ उपलब्ध

स्वराज 855 FE की स्मार्ट टेक्नालॉजी ज्यादा प्रोडक्टिविटी देने में सक्षम

(बिजनेस रिपोर्टर)

चंडीगढ़। ट्रैक्टर उद्योग का जाना-पहचाना ब्रांड स्वराज 855 FE अब PRO-TEK की स्मार्ट टेक्नालॉजी के साथ उपलब्ध करवाया गया है। PRO-TEK टेक्नालॉजी ज्यादा उत्पादकता एवं बेमिसाल कम्फर्ट देने में सक्षम है।

जो किसान खेती से भरपूर मुनाफा चाहते हैं उनके लिये स्वराज 855 FE में PRO-TEK स्मार्ट टेक्नालॉजी प्रयुक्त की गई है। यह टेक्नालॉजी खेती और कमर्शियल दोनों कार्यों को आसान बनाती है। स्वराज PRO-TEK वर्तमान के साथ भविष्य की तकनीक है जो आपको हमेशा औरों से दो कदम आगे रखता है। स्वराज 855 FE में प्रयुक्त की गई PRO-TEK तकनीक सटीक इंजीनियरिंग एवं पावरफुल परफार्मेंस से सारे कार्यों को आसान बनाती है। स्वराज PRO-TEK में ऐसी अनेकों खूबियां हैं जो ट्रेक्टर को अधिकतम उत्पादकता के लिये तैयार रखती है। खेती के सभी कार्यों के साथ ही व्यावसायकि कार्यों को भी करने में यह तकनीक अव्वल है।

PRO-TEK ट्रेक्नोलॉजी से मिले ज्यादा प्रोडक्टिविटी

स्वराज 855 FE में PRO-TEK टेक्नोलॉजी से बेस्ट-इन-क्लास लिफ्ट कैपासिटी से लेकर सेरामेटालिक क्लच प्लेट्स और अत्याधुनिक मल्टीस्पीड PTO आप्शन उपलब्ध है जो अधिकतम उत्पादकता के साथ प्रगति की राह आसान बनाता है। यह सिर्फ एक ट्रैक्टर नहीं बल्कि किसानों की किस्मत चमकाने का उदितमान तारा है।

पावर सेंस लिफ्ट- इसमें 2500 किलोग्राम तक के क्षमता वाले कृषि उपकरणों को आसानी एवं सटीकता से काम करने की शक्ति है।

हायर हायड्रोलिक फ्लो- 32 एलपीएम का हायर हायड्रोलिक्स फ्लो भारी से भारी कृषि यंत्रों एवं ट्राली को संचालित करने में सक्षम है।

ड्यूरा मैक्स क्लच- बेलर, लोडर और हाई स्ट्रैस वाले कार्यों के साथ लंबा चलने में उपयुक्त।

FCM ट्रांसमिशन- लंबे समय तक चलने वाला गियर बाक्स जो गियर शिफ्टिंग को आसान बनाता है।

हायर ट्रांसपोर्ट हाइट- सभी तरह के कृषि यंत्रों के साथ सुगमता से ऊंची से ऊंची मेड़ों को पार करने में सक्षम।

डिफ्रेन्शियल लाक- इसमें प्रयुक्त किया गया डिफ्रेन्शियल लाक कीचड़ में फसने पर ट्रैक्टर को आसानी से बाहर निकालता है।

ड्यूरा टफ एक्सल- पडलिंग, रिवर्स स्कैपर, ढुलाई और जुताई के दौरान मुश्किल काम में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। 4WD आप्शन बेहतर ग्रिप के साथ काम को आसान बनाते हुये ज्यादा प्रोडक्टिविटी सुनिश्चित करता है। इसमें प्रयुक्त किया गया ड्युअल PTO भारी कृषि उपकरणों को आसानी से चलाता है।

सस्पेंडेड पेडल्स से आरामदायक ब्रेक और क्लच आपरेशन सुनिश्चित करता है। कॉम्फी-फ्लैट डेक के कारण ज्यादा लेगरूम एवं पूरे समय आराम के लिये फुल फ्लैट प्लेटफार्म दिया गया है।

बैलेन्स्ड पावर स्टेरिंग- खेती के कार्यों एवं ढुलाई के दौरान चालक को बेहतर स्टेरिंग नियंत्रण और आराम सुनिश्चित करवाता है।

हायर फ्यूल टैंक- 70 लीटर क्षमता वाला हायर फ्यूल टैंक कैपासिटी जो बिना रुके चलता रहे। ईजी-शिफ्ट के कारण साइड शिफ्ट गियर को आसान बनाता है। न्यूनतम लिवर मूवमेंट से गियर शिफ्टिंग अत्याधुनिक सुविधाजनक।

मैकेनिकल टॉगल- मोड़ पर कृषि उपकरणों को आसानी से उठाने में सक्षम।

स्वराज PRO-TEK में वर्सा PTO, क्रॉप किट एवं डायरेक्ट ड्राइव PTO प्रयुक्त किया गया है। जो खेती के सभी कार्यों को अत्यधिक सुविधाजनक बनाता है। इसके अलावा स्टायलिश लीवर्स, नया वर्डमार्क, डिजिटल क्लस्टर, मेटेलिक कलर, क्रोम डिकेल्स, वर्क डिस्ट्री एवं सुरक्षा अलर्ट्स ट्रैक्टर को खास बनाते हैं। तेल में डूबे हुये ब्रेक्स, 12 फारवर्ड और 3 रिवर्स गियर के साथ 4WD एवं 2WD में उपलब्ध है।

धानुका का पर्ज करे सोयाबीन की बढ़वार और खरपतवारों पर करारा वार

मैं अदवैत नागदिया ग्राम बामोरा, तहसील व जिला उज्जैन का मूल निवासी हूँ। मेरा मुख्य कार्य खेती है। मेरे पास लगभग 15 एकड़ जमीन है जिसमें सोयाबीन की खेती करता हूँ। मैं विगत 2 वर्षों से धानुका एग्रीटेक लिमिटेड के पर्ज नामक खरपतवारनाशक का उपयोग कर रहा हूँ। यह एक बहुत ही अच्छा उत्पाद है, जो खरपतवारों की समस्या से फसल को सुरक्षा प्रदान करता है। मैंने पर्ज का 400 मिली 150 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से स्प्रे किया जिससे मेरी फसल खरपतवारों से मुक्त रही। यह चौड़ी पत्ती और सकरी पत्ती वाले खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण करता है।

परिणामों को देखते हुए मैं अन्य किसान भाईयों से अनुरोध करता हूं कि आप भी खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण के लिए पर्ज का उपयोग करें। अधिक जानकारी के लिए मुझसे मोबाइल नंबर 87702-96621 पर संपर्क कर सकते हैं।

आरवीएसकेवीवी बना राष्ट्रीय नवाचारों का केंद्र

ग्वालियर। नवाचारों को प्रयोगशाला से उद्योग तक पहुंचाने की दिशा में राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय (आरवीएसकेवीवी), ग्वालियर को बड़ी जिम्मेदारी मिली है। भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय ने विश्वविद्यालय को एमएसएमई आइडिया हैकाथॉन 6.0 का मेजबान संस्थान घोषित किया है। इसी के तहत कुलपति प्रो. (डॉ.) अरविंद कुमार शुक्ला और विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. वाई.पी. सिंह ने प्रतियोगिता के आधिकारिक पोस्टर का विमोचन किया।

विश्वविद्यालय के कृषि व्यवसाय इनक्यूबेशन एवं उद्यमिता केंद्र को इस राष्ट्रीय कार्यक्रम का सहयोगी व्यवसाय इनक्यूबेटर बनाया गया है।

अब धान की फसल पर भी मिलेगा भावांतर योजना का लाभ

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश के धान उत्पादक किसानों के लिए बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि अब धान की फसल को भी भावांतर योजना का लाभ मिलेगा। राज्य सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य और बाजार मूल्य के बीच के अंतर की राशि किसानों के खातों में जमा करेगी। उन्होंने कहा कि किसानों की समृद्धि ही सरकार का सबसे बड़ा लक्ष्य है और प्रदेश सरकार खेत से लेकर बाजार तक किसानों को बेहतर सुविधा उपलब्ध कराने के लिए लगातार काम कर रही है।

डॉ. यादव ने कहा कि महाकौशल क्षेत्र धान उत्पादन के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। यहां की छत्री धान को हाल ही में जीआई टैग मिलने से इस क्षेत्र की पहचान वैश्विक स्तर पर मजबूत हुई है। उन्होंने कहा कि अब प्रदेश सरकार धान उत्पादक किसानों को एमएसपी और बाजार मूल्य के अंतर की भरपाई करेगी, जिससे किसानों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य मिल सके। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना के तहत प्रदेश के 3,941 किसानों के खातों में 2 करोड़ 84 लाख रुपये की बोनस राशि सिंगल क्लिक के माध्यम से अंतरित की। किसानों को कोदो-कुटकी पर 1,000 रुपये प्रति क्विंटल बोनस दिया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना के माध्यम से कोदो-कुटकी की वैल्यू चेन विकसित कर रही है। प्रसंस्करण, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और विपणन की बेहतर व्यवस्था की जा रही है। 'नर्मदा मिलेट्स' ब्रांड के जरिए मध्यप्रदेश के श्रीअन्न को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंचाया जा रहा है। सरकार ने वर्ष 2026-27 में 40 हजार मीट्रिक टन कोदो-कुटकी खरीदने का लक्ष्य रखा है। साथ ही डिंडौरी में मध्यप्रदेश राज्य श्रीअन्न अनुसंधान केंद्र की स्थापना भी की जा रही है।

कृषक कल्याण वर्ष में किसानों से होगा सीधा संवाद, आय बढ़ाने पर रहेगा फोकस: सीएम

मुख्यमंत्री ने की कृषक कल्याण वर्ष के अंतर्गत संचालित गतिविधियों की समीक्षा

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि खेती की लागत कम करना और किसानों की आय बढ़ाना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसी उद्देश्य से वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष घोषित किया गया है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि किसानों से राजधानी से लेकर ग्राम स्तर तक सीधे संवाद के कार्यक्रम आयोजित किए जाएं तथा योजनाओं का मिशन मोड में क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दुग्ध उत्पादन किसानों की अतिरिक्त आय का प्रभावी माध्यम है। उन्नत नस्ल की गाय उपलब्ध कराने में निजी संस्थाओं का सहयोग लिया जाए तथा ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे केंद्रों का विस्तार किया जाए। उन्होंने कम पानी और अल्प अवधि वाली फसलों, प्राकृतिक एवं जैविक खेती तथा फसल विविधीकरण को भी बढ़ावा देने के निर्देश दिए। साथ ही सहकारी समितियों की प्रक्रियाओं का डिजिटलाइजेशन करने पर जोर दिया।

समीक्षा बैठक में बताया गया कि जुलाई में ऑनलाइन किसान क्रेडिट कार्ड पोर्टल और ई-पासबुक सुविधा शुरू की जाएगी। प्रदेश के सभी जिलों में बलराम कृषि महोत्सव, संभागीय मुख्यालयों पर फूड फेस्टिवल तथा विभिन्न जिलों में किसान सम्मेलन, केला महोत्सव, सब्जी महोत्सव, गन्ना महोत्सव, कपास एवं मिर्च महोत्सव, एफपीओ सम्मेलन और आधुनिक कृषि तकनीकों पर कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जाएगा।

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास,
होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

कृषक दूत ➡ मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास,
होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755-4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम..

संस्था का नाम..

पूरा पता..

ग्राम.............................पोस्ट.............................तहसील.............................

जिला.............................राज्य.............................पिन कोड

दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में)............................ (शब्दों में)............................

बैंक का नाम............................ ड्राफ्ट चेक क्रमांक............................

दिनांक............................ संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान............................ प्रतिनिधि का नाम एवं हस्ताक्षर हस्ताक्षर सदस्य एवं संस्था सील

दिनांक............................

उम्मीद से ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

50 HP **Chetak DI 65 (4WD)**

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- हैवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre

दमदार ट्रैक्टर शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रैक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्यूल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15–90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.
Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार